मरूधरा

वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका अंक- प्रथम, वर्ष 2021

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर

गणतन्त्र दिवस पर सुसज्जित महालेखाकार भवन

स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर महालेखाकार महोदया द्वारा संबोधन

<u>मरूधरा परिवार</u>

संरक्षिका- अतूर्वा सिन्हा, महालेखाकार
परामर्शदाता - श्री संजीव कुमार सुराना, उप-महालेखाकार
प्रधान संपादक- श्री अरुण कुमार शर्मा, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक मंडल- श्री अशोक कुमार शर्मा, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती शिवपाली खण्डेलवाल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री अजित सिंह, क. अनुवादक

सह-संपादक- श्री अशोक कुमार यादव, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री अभिराज सिंह, वरि. लेखापरीक्षक
श्री रमेश कुमार गुप्ता, वरि. लेखापरीक्षक
श्रीमती मीनाक्षी पाठक, वरि. लेखापरीक्षक
श्री शंकर लाल सीमावत, क. अनुवादक

<u>टिप्पणी</u>- *संपादक मंडल को पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त रचनाकारों के विचार से सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाकार स्वयं अपनी रचनाओं की मौलिकता के लिए उत्तरदायी हैं।*

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेखक	रचना	पृ.सं,
01	सम्पादकीय	अशोक कुमार शर्मा	5
02	हम भारत के लोग	अशोक कुमार शर्मा	6
03	नव वर्ष गीत	वीपी शर्मा 'विजय', अतिथि रचनाकार	7
04	मरुधरा के पंछी	अतूर्वा सिन्हा, महालेखाकार	8-12
05	जयपुर: एक लेखापरीक्षक की नजर से	ओंकार, उप-महालेखाकार	13-15
06	टोंक रियासत के अनछुए पर्यटन स्थल	अनिता सुराणा, अथिति रचनाकार	16-19
07	आरती का दीप (गीत रचना)	सुरेन्द्र कुमार शर्मा, अतिथि रचनाकार	20
08	मेरी माँ	राजुल कौशिक, अतिथि रचनाकार	20
09	अंगड़ाइयां	शिवपाली खंडेलवाल, स.ले.प.अ.	21
10	पानी और बर्फ	कैलाश आडवाणी, वरि. लेखाकार	22
11	सड़क सुरक्षा	दिनेश कसेरा, व.ले.प.अ.	23-24
12	खनिजों का संसार- मरूधरा राजस्थान- लेखापरीक्षा की नजर	शैलेन्द्र शर्मा, व.ले,प.अ.	25-26
13	मां थोड़ा अपने लिए भी जियो न	शालिनी अग्रवाल, अतिथि रचनाकार	27-29
14	भारतीय साहित्य एवं संस्कृति में नारी का स्थान	डॉ. रानी दाधीच, अतिथि रचनाकार	30-32
15	राजस्थान प्रदेश की अनुपम झलकियाँ	शंकर लाल सीमावत, क. अनुवादक	33-34
16	जनक जी की दुविधा	एस सी मित्तल,व.ले.प.अ.	35-37
17	आप एकान्त में या अकेले...... आइये पता लगाते है	अरुण कुमार शर्मा, व.ले.प.अ.	38-39
18	लकीर	अशोक वर्मा, डी.ई.ओ.	40
19	राष्ट्रीय बचत मासिक आय योजना	दीपिका जोशी, अतिथि रचनाकार	41-42
20	हिंदी पखवाड़ा समारोह- 2020 की गतिविधियाँ	राजभाषा कक्ष	43-44
21	कार्यालय उपयोग में काम आने वाली शब्दावली	राजभाषा कक्ष	45
22	छायाचित्र	राजभाषा कक्ष	46-48

सम्पादकीय

विभागीय ई-पत्रिका **'मरूधरा'** का प्रथम अंक सुधि पाठकों को सौंपना अपार हर्ष का विषय है। राजभाषा की महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए संविधान सभा द्वारा 14 सितम्बर 1949 को संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी को मान्यता दी गई थी। भारत के संविधान में तथा राजभाषा अधिनियम आदि में भी हिन्दी के सम्बन्ध में समुचित प्रावधानों का समावेश किया गया है। हिन्दी में कामकाज को बढ़ावा देने के लिये निरन्तर किये जा रहे प्रयासों में नई कड़ियों के रूप में मारीशस में आयोजित किये गये 11वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली '**कंठस्थ**' का लोकार्पण किया गया है जिसके द्वारा अनुवादक पूर्व में की गई अनुवाद सामग्री का पुनः प्रयोग कर महत्वपूर्ण समय की बचत कर सकता है। इसी क्रम में राजभाषा विभाग द्वारा **लीला हिन्दी प्रवाह मोबाईल एप** का लोकार्पण गत् हिन्दी दिवस को किया गया है जिसकी सहायता से 14 विभिन्न भाषा-भाषी अपनी मातृभाषाओं में हिन्दी निःशुल्क सीख सकते हैं। इसके अतिरिक्त **'ई-महाशब्दकोश'** मोबाईल एप तथा **'ई-सरल हिन्दी वाक्यकोश**' का लोकार्पण हाल ही में किया गया है। हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु किये जा रहे महायज्ञ में 'मरूधरा' का प्रकाशन हमारी ओर से एक विनम्र एवं श्रद्धापूर्ण आहुति का कार्य करेगा।

प्रस्तुत अंक में हमारा प्रयास रहा है कि यह हमारे कार्यालय की कार्य संस्कृति का प्रतिनिधित्व करे, विभिन्न गति-विधियों के बारे में जानकारी प्रदान करे, हिन्दी में कामकाज को बढ़ावा देने के साथ-साथ सृजनात्मक गतिविधियों को प्रोत्साहन प्रदान कर राजभाषा के विकास में सहायक बने। वैविध्यपपूर्ण आलेख, कवितायें, हिन्दी पखवाड़ा की गतिविधियाँ, लेखा परीक्षा कार्य में सहायक एवं ज्ञानवर्धक सामग्री तथा राजस्थान की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर के रंग-बिरंगे आकर्षक छायाचित्रों के संकलन को पाठकों का स्नेह एवं सहयोग प्राप्त होगा यह हमारा दृढ़-विश्वास है।

सभी उच्चाधिकारियों विशेष रूप से माननीया अतूर्वा सिन्हा, महालेखाकार (लेखा परीक्षा-II), राजस्थान एवं आदरणीय एस. के. सुराणा, उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा प्रबन्धन समूह-III) तथा राजभाषा अनुभाग के सदस्यों, समस्त रचनाकारों एवं पाठकों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिनके बिना यह महनीय कार्य पूर्ण होना संभव नहीं था। इस पत्रिका को ओर अधिक उपयोगी एवं सार्थक बनाने के लिये पाठकों के सुझावों का सदैव स्वागत है।

-अशोक कुमार शर्मा

हम भारत के लोग

सात रंग के इन्द्र-धनु हैं, हम भारत के लोग,
संस्कृति के जनक मनु हैं, हम भारत के लोग।
हम भारत के लोग बोलते, भाषा भाव भरी,
हम से यह धरती धानी, हम से है रंग भरी।।

सदा बांटे आये उजाले, गहन निशाओं को,
हमने दे आलोक प्रकाशित, किया दिशाओं को।
विश्व-गुरु जो जगत कहे तो, है केवल संजोग,
कर्तव्यों के प्रति निष्ठ हैं, हम भारत के लोग।।

शाहों के ना चरण चूमते, स्वाभिमान खोकर,
हम प्रताप के वंशज मारें, वैभव को ठोकर।
अग्नि-गर्भ स्वीकार हमें, आन ना जाने देते,
मदमाती आँखों को जौहर-ज्वाला दिखला देते।।

भालू-बन्दर-सांप-मदारी, है जादू का जोर,
और दूसरी ओर नापते, अन्तरिक्ष के छोर।
एक ओर आध्यात्म हमारा, एक ओर उद्योग,
मोबाइल पर बातें करते, कुम्भ नहाते लोग।।

उर्ध्व-मगों पर चरण बढ़ाते, हम भारत के लोग,
जो भी बढ़ना चाहे बुलाते, हम भारत के लोग।
नहीं भोग का रोग हमें, हम साधें संयम योग,
कृपा-सिन्धु हैं, विश्व-बंधु हैं, हम भारत के लोग।।

-अशोक कुमार शर्मा

नव वर्ष गीत

नया जोश है, नई सोच है, नई भोर है, नव प्रभात है ।
नये साल का स्वागत करने, दुल्हन जैसी सजी रात है ।।

नई प्रेरणा, नई धारणा,
नई प्रगति है, नई कामना ।
नई डगर है, रात नई है,
नई दिशा है, नई भावना ।।

नई उमंगें, नई तरंगें, नए साल से मुलाकात है ।
नए साल का स्वागत करने, दुल्हन जैसी सजी रात है ।।

नये राज हैं, नई रीतियां,
नई रिवाजें, नई रीतियां ।
नये राग है, नई रागिनी,
नये दिलों की, नई प्रीतियां ।।

नये कलेवर, नये फ्लेवर, नये साल में नई बात है ।
नये साल का स्वागत करने, दुल्हन जैसी सजी रात है ।।

नये जश्न हैं, साज नये हैं,
नई महफिलें, नाज़ नये हैं ।
मय, प्याले, साकी, पैमाने,
पीने के अंदाज़ नये हैं ।।

बूढ़े, बच्चे, जवां थिरकते, नये साल की करामात है ।
नए साल का स्वागत करने, दुल्हन जैसी सजी रात है ।।

-वी पी शर्मा 'विजय' , अतिथि रचनाकार

मरुधरा के पंछी

निःसंदेह राजस्थान की पहचान थार मरुस्थल की सुनहरी रेत, ऊंटों के काफिले, गौरवमयी इतिहास और रंगबिरंगी पोशाकों से जुड़ी है। समृद्ध सांस्कृतिक और भौगोलिक विरासत वाले इस प्रदेश को प्रकृति ने ऐसे अनगिनत रंगों का उपहार दिया है- जो इसकी शुष्कता की भरपाई करता राजस्थान आने-जाने का मेरा सिलसिला पुराना है। तीन साल पहले जयपुर में पदस्थापन होने पर मुझे यहाँ की प्राकृतिक विविधता को ज़्यादा निकटता से देखने और महसूस करने का मौका मिला। पंछियों और पेड़ों के साथ कितना गहरा नाता है यहाँ के जनजीवन का!

यहाँ के लोकगीतों, पारम्परिक चित्रों और यहाँ तक कि ब्लॉक प्रिंट्स में भी कई पेड़ों और पक्षियों के चित्र मिल जाते हैं। राजस्थान के प्राचीन साहित्य में शिकार, मौसम और जलवायु पूर्वानुमान के संदर्भ में कुरजां और मोर जैसे कई खूबसूरत परिंदों का ज़िक्र है। यहां तक कि पक्षियों के बारे में कई मिथक और किंवदंतियां भी बन गयीं है। राजस्थान में पंछियों के लिए दाना डालने और जगह-जगह पानी के पात्र रखने की सुन्दर और दिल को छू जाने वाली परंपरा है। यह प्रकृति के साथ तालमेल से जीने का एक और उदाहरण है जिसे मैंने भी अपना लिया।

प्रकृति और पर्यावरण के लिए सजगता आने के साथ इन दिनों बर्डवॉचिंग एक शौक बन गया है। लोग पक्षियों को देखने और उनकी तस्वीरें खींचने के अभियान पर जाते हैं। राजस्थान में कई ऐसे शहर हैं, जहाँ आपको परिंदों को देखने के लिए अलग से कहीं जाने की ज़रूरत नहीं। बस थोड़े शांत वातावरण में अपने आसपास देखिये, पक्षियों की अनेक प्रजातियाँ नज़र आ जायेंगी।

जयपुर में पदस्थापन के आरंभिक दिनों में अतिथि गृह की छत पर नाचते मोर को देखकर मेरा मन भावविभोर हो जाता था। गौर से देखने पर मैंने पाया कि हमारी महालेखाकार कॉलोनी में ही परिंदों की कई किस्में हैं। चित्तीदार छोटे उल्लुओं का एक परिवार तो लगभग दिन भर सामने वाले एक पेड़ पर बैठा रहता था। उनकी पीले रंग की बड़ी-बड़ी गोल आँखें किसी को भी सम्मोहित कर लें। तेज़ गर्मी के दिनों में तो कभी-कभी पूरा उल्लू परिवार पानी पीने के लिए हमारे बाग में आ जाता था। मोरों का एक जोड़ा भी अक्सर घूमता हुआ दिख जाता था। यहाँ मोर इतने आम हैं कि मुझे कैमरा ले कर उनके पीछे जाते देख कर कॉलोनी में काम कर रहे मालियों और अन्य कर्मचारियों को अचरज होता था। कई बार तो हमारे घर के बाहर मोर आराम से दाना चुगता रहता था और माली पास में ही अपना काम करते रहते थे।शांति पूर्ण सह-अस्तित्व की अद्भुत मिसाल! ऐसे ही एक दिन मैंने पाया कि घर के बाहर बने गार्ड-रूम की छत पर एक मोरनी ने अंडे दिए हैं। कुछ दिनों बाद उनसे जन्मे मोर के चार छोटे-छोटे बच्चे हमारी कॉलोनी में घूमते नज़र आये। पंछियों के जीवन के ये नज़ारे इतने नज़दीक से मैंने पहले कभी नहीं देखे थे।

सिर्फ मोर और उल्लू ही नहीं, जयपुर में बड़ी आसानी से बुलबुल, मैना, कई प्रकार के तोते, और सातभाई (जंगल बैबलर) दिख जाते हैं। बाघों के डेंटिस्ट कहलाने वाले परिंदे रूफस ट्रीपाई (Rufous treepie) भी कभी-कभार दिख जाते हैं। कहते हैं कि ये बाघ के मुँह में घुस कर दाँतों के बीच फंसे खाने के अवशेषों को अपना आहार बनाता है, इस दौरान बाघ भी उसे कोई नुकसान नहीं पहुंचाता।

हूपु, टिटहरी, नील कंठ और हॉर्न बिल का दिखना भी काफ़ी आम है। राजस्थान की झाड़ियों में ये प्रजातियां लम्बे समय से रहती आयी हैं। बारिश के दिनों में एक दिन सुबह मुझे यहाँ पहली बार किंग-फ़िशर दिखाई दिया, जो पत्थर के फव्वारे पर बैठा था। फिर तो कई बार किंगफ़िशर के पूरे परिवार से मुलाकात होती रही।

सितम्बर की एक सुबह ऐसे ही किंग फ़िशर की तस्वीरें लेते हुए मेरी नज़र मौलसिरी के पेड़ पर गयी तो वहां बैठी एक पीली चिड़िया को देखकर मैं ठिठक गयी। मैंने पहले कभी इस पक्षी को नहीं देखा था। ये पीलक या भारतीय गोल्डन ओरियल पक्षी बहुत आसानी से नहीं दीखता है।

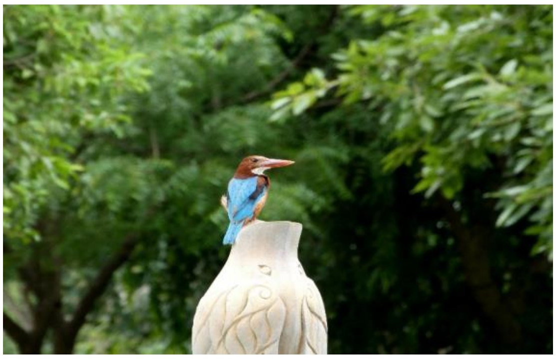

ये जितना सुंदर दीखता है, उतना ही मीठा गाता भी है ।

गर्मी के दिनों में आम के पेड़ से कोयल की कूक तो अक्सर सुनाई देती है लेकिन जयपुर में आकर पहली बार आम के पेड़ पर रहने वाले कठफोड़वा के एक जोड़े को देखा। यह काली गर्दन तथा काली दुम वाले कठफोड़वा की एक मात्र सुनहरी पीठ वाली (ब्लैक-रम्प्डफ्लेमबैक) प्रजाति है।

सिर्फ ये ही नहीं, सर्दियों के आते ही राजस्थान में दूर देशों से आने वाले रंग-बिरंगे प्रवासी पक्षियों का तांता लग जाता है जो बड़ी संख्या में साइबेरिया की कठोर सर्दियों से बचने के लिए ईरान और अफगानिस्तान से होते हुए भारत पहुँचते हैं; ये पक्षी भरतपुर, सांभरझील, रणथंभौर, सरिस्का और कई अन्य छोटे और बड़े घास के मैदानों, जल निकायों, पार्कों और अभ्यारण्यों को अपना प्रवास स्थल बनाते हैं। राजस्थान राज्य सदियों से इन पंछियों की मेज़बानी करता आया है। इस प्रान्त की पारम्परिक कला, बूँदी के लघुचित्रों से लेकर खानाबदोश जनजातियों के गीतों तक में इन पक्षियों का उल्लेख बहुत सहजता से देखा जा सकता है।

फ़रवरी 2020 में भरतपुर के केवला देव राष्ट्रीय पक्षी अभ्यारण्य जाने का अवसर मिला। मुझे याद नहीं कि देश के किसी और भाग में या अन्य देशों में भी मैंने कभी इतने परिंदे एक साथ देखे हों। एक बहुत बड़ा पर्यटन आकर्षण होने के साथ ही इसे यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत स्थल भी घोषित किया गया है। यह आर्द्र भूमि (वेटलैंड) है, जिसे

भरतपुर क्षेत्र को अक्सर आने वाली बाढ़ से बचाने के लिए बनाया गया था। सर्दियों में हज़ारों प्रवासी जल पक्षी यहां प्रजनन करने और थोड़े दिन ठहरने के लिए आते हैं।

राजस्थान के गाँव-खेतों में सर्दी के महीनो में अक्सर ये प्रवासी पक्षी दीख जाते हैं। इन का हर साल यहाँ आना इतना सहज है कि राजस्थानी लोकगीतों में भी इनका ज़िक्र आता है। दूर देश से आये इन सुन्दर मेहमानों का राजस्थान वैसे ही स्वागत करता है जैसे देश-विदेश से आये पर्यटकों का। यह सच है कि पुराने समय में पशु-पक्षियों का शिकार इस प्रान्त की संस्कृति का भाग था। विशेषकर शाही परिवारों में शिकार की परंपरा थी और इसकी प्रतिस्पर्धाएं होती थीं, किन्तु समय के साथ सब बदल गया है।
आज आम राजस्थानी लोग इन पक्षियों को नुकसान नहीं पहुँचाते।

पक्षियों की तरह ही राजस्थान में पेड़-पौधों को सुरक्षित रखने के प्रति भी बहुत सजगता है। जल का अभाव होने के बावजूद पेड़ों की रक्षा और देखभाल के प्रति यहाँ के लोग बहुत जागरूक हैं। शायद मरुधरा के निवासी ही जल, पशु-पक्षियों और पर्यावरण के महत्व को समझ सकते हैं। यही कारण है कि ये प्रवासी पक्षी भी निश्चिन्त होकर यहाँ आते हैं।

आज अपने कार्यालय के कक्ष से बाहर नज़र डालने पर सेंट्रल पार्क के ऊपर चक्कर लगाती चीलें दिखाई देती हैं। मन में आता है कि शायद इनमे से कुछ सुदूर उज़्बेकिस्तान से आयी होंगी और कुछ यहीं की होंगी। आज भी मैं अपने आपको गंभीर बर्डवॉचर मानती हूँ और ना कि पक्षी विशेषज्ञ। लेकिन, राजस्थान की मरुधरा के इन पंछियों

से मुलाकात ने मुझे यह तो सिखला ही दिया है कि पेड़ों, पशु-पक्षियों और अनुकूल पर्यावरण के बिना मानव जीवन के रंग अधूरे हैं।

-अतूर्वा सिन्हा, महालेखाकार

हिंदी भाषा में करें, सभी राष्ट्र जन बात,
निज अस्मिता होगी प्रकट, फैलेगा प्रभात,
फैलेगा प्रभात, हृदय कुसुम खिल जायेंगे
तज कर क्षुद्र स्वार्थ, सभी जन मिल जायेंगे
पूरी होगी तभी, मातृभूमि की आशा
सबके अधरों पर खेलेगी, जब हिंदी भाषा !

जयपुर: एक लेखापरीक्षक की नजर से

शहर ने कहा आज मैं आपको अपना दर्द बताऊंगा, जब लेखापरीक्षक ने उससे 5 तथ्यों (मानदंड, शर्त, कारण, परिणाम और निष्कर्ष) के बारे में पूछने और समस्या उन्मुख दृष्टिकोण से उससे जुड़ी समस्याओं का विश्लेषण करने के लिए संपर्क किया। शहर दर्द में रोया और कहा कि अब आप सक्षम लेखापरीक्षक के रूप में मुझे आशा की आखिरी एक किरण दिखाई देते हैं। लेखापरीक्षक ने बिल्कुल स्पष्टता से कहा कि आपके द्वारा प्रस्तुत तथ्यों के सहायक दस्तावेजों के बिना मैं वास्तव में आपकी मदद नहीं कर सकता। शहर ने कहा कि मैं सहायक दस्तावेजों की दृष्टि से कमजोर हूँ। लेकिन, पहले मेरी कहानी सुनो! हो सकता है कि आप किसी तरह से मदद कर सकें। मैंने पहले भी विभिन्न अधिकारियों से प्रार्थना की है लेकिन किसी ने भी मेरी मदद नहीं की। अब केवल ही आप मेरी आशा की अंतिम किरण हैं। यह सुनकर लेखापरीक्षक ने शहर से कहा कि आप कृपया अपनी कहानी शुरू करें और मैं यथासंभव सर्वोत्तम तरीके से आपकी मदद करने का प्रयास करूंगा।

शहर ने पूछा मुझे कहाँ से शुरू करना चाहिए? चलो मेरे निर्णाण से ही प्रारंभ करें। सन् 1727 का वो समय जब मुझे बनाया जा रहा था, महाराजा जय सिंह मुझे आकार देने में लगे थे, उनका मेरे लिए अधिकतम सुरक्षा सुनिश्चित करना सबसे विशेष था इसी कारण से उन्होने मुझे भली-भाँति संरक्षित तरीके से डिजाइन करने के लिए अपने समस्त वैज्ञानिक और सांस्कृतिक कौशल का उपयोग किया। इसके लिए उन्होंने मेरे चारों ओर सात मजबूत दरवाजों के साथ विशाल किले की दीवारों का निर्माण किया। मूल योजना के अनुसार शहर के कुल आठ द्वार थे और बीसवीं शताब्दी के मध्य में एक और जोड़ा गया था। ये द्वार जो पुराने शहर तक पहुँच प्रदान करते हैं। ये द्वार मेरे सुरक्षा कवच के रूप में भी काम करते थे तथा मेरी और मेरे निवासियों की दुश्मनों या बाहरी खतरों से रक्षा करते थे। पहले मेरे द्वार शाम को बंद हो जाते थे और सुबह भोर होने पर ही खुलते थे। शाम को सभी नागरिकों के लिए द्वार बंद करने की घोषणा करने हेतु एक छोटी तोप को चेतावनी के रूप में चलाया जाता था।

जैसे-जैसे शहर विस्तृत होता गया और नए क्षेत्र इन द्वारों और चारदीवारी से परे विकसित होते गए। सन् 1940 के बाद शाम द्वार बंद करने की परंपरा को बंद कर दिया गया। ये 7 द्वार सूरज पोल, चाँद पोल, ध्रुव पोल, अजमेरी गेट, नया पोल, सांगानेरी गेट और घाट पोल मेरे मुकुट के गहने की तरह थे। अब मैं सभी दिशाओं में विकसित और विस्तारित हो गया हूँ, जिससे आपको लगेगा कि मुझे खुश होना चाहिए लेकिन यह आंशिक रूप से सच है। विस्तार ने मेरे आकर्षण को कम कर दिया है। अब न तो मैं पहले की तरह सुरक्षित महसूस कर पा रहा हूँ न ही पहले की तरह सुंदर। मेरे दिल के अंदर लंबा ट्रैफिक जाम (जैसे परकोटा क्षेत्र में), अतिक्रमण, मेरी नदियों की धारा (रामगढ़ नहर) पर कब्जा, मेरे जल निकासों में

सीवेज का प्रवाह इत्यादि सब मुझे चिंतित कर रहे हैं कि मैं कब तक जीवित रहूंगा या मेरी सुंदरता को कब तक बनाए रखने में सक्षम हो पाऊँगा। सांभर झील में मेरे पास आने वाले प्रवासी पक्षियों की मौत मुझे बहुत अधिक दुखी करती है क्योंकि मैं अपने अप्रवासी बच्चों की रक्षा भी नहीं कर सकता। आदर्श रूप से विलग कई होटल मेरे वक्षस्थल पर खड़े हो गए हैं और कई बहुमंजिला इमारतें भी खड़ी हो गई हैं, जो अवैध रूप से बनाई गई हैं। मैं वास्तव में अपने दिल को लेकर चिंतित हूँ जिसका स्वास्थ्य अब बहुत अच्छा नहीं है। यह तेजी से स्पंदित होता रहता है और मुझे यातायात और पार्किंग की समस्या के बारे में बताता रहता है तथा यह अनुभव करता है कि एक दिन उसका दम घुट जाएगा। अब श्रीमान लेखापरीक्षक मुझे बताओ, क्या तुम इसमें मेरी मदद कर सकते हो?

मैंने वह सब कह दिया है जो मुझे कहना था,शहर ने कहा। लेखापरीक्षक, जो समस्या के बारे में सभी विवरणों को उत्सुकता से दर्ज कर रहा था, ने अपनी नोट-बुक में दर्ज करना बंद किया और कहा कि देखिए मैं एक ऐसी ही परियोजना पर काम कर रहा हूँ जो आपके संकटों को हल कर सकती है। वह तब शहर को "लेखापरीक्षा के लिए समस्या उन्मुख दृष्टिकोण" का परिचय देता है। वह फिश बोन डायग्राम को दिखाता है जो उसने उन क्षेत्रों का हवाला देते हुए बनाया था, जिनके निवारण की आवश्यकता थी। इससे शहर अत्यधिक प्रभावित हुआ। लेखापरीक्षक ने कहा मेरे प्रिय शहर! इससे पहले कि मैं कुछ कर पाऊँ मुझे इस पर अनुमोदन लेना होगा। साथ ही इसमें शामिल कई संगठनों को परस्पर समन्वय और सहयोग विकसित करने की आवश्यकता होगी। लेखापरीक्षक ने कहा कि मैं विस्तृत योजना के साथ कुछ समय पश्चात आपके पास वापस आऊँगा और आपको समाधान सुझाऊँगा।

शहर ने बीच में रोका और कहा, मुझे इसके समाधान की जानकारी है और मैं आपको बता सकता हूँ लेकिन समस्या यह है कि जैसा मैं कह रहा हूं वैसा कोई नहीं कर रहा है। तो समस्या वास्तव में वह नहीं है जिसे आपने सोचा था। वस्तुतः समाधान को जानने के बावजूद भी कोई इसका निराकरण नहीं कर रहा है।

लेखापरीक्षक ने अपनी सीमायें स्पष्ट करते हुए कहा कि मैं केवल अनुसंशा तो कर सकता हूँ, किन्तु कार्यकारी की भूमिका नहीं निभा सकता। फिर भी, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं आपकी समस्या के बारे में आपके निवासियों में अपनी खोज और अवलोकन के माध्यम से जागरूकता पैदा करूंगा और वे आपकी लड़ाई लड़ेंगे। लेखापरीक्षक ने शहर छोड़ा और अपने घर वापस आया। उसने उस बदलाव की यात्रा शुरू की जिसका उसने शहर से वादा किया था। लेखापरीक्षक अब भी परियोजना पर काम कर रहा था, लेकिन उसे पता चल गया था कि अब दिल की कुछ धाराएं बेहतर तरीके से बह रही हैं। इस बीच सूचना थी कि शहर के दिल को यूनेस्को ने विश्व धरोहर स्थल घोषित कर दिया है और प्रशासनिक दृष्टि से पूर्व नगर निगम को जयपुर हेरिटेज और जयपुर ग्रेटर के रुप में बाँट दिया गया है। तथा शहर के दिल पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

समय बीतता गया और एक दिन लेखापरीक्षक फिर शहर से मिला लेकिन इस बार शहर काफी बेहतर मनःस्थिति में था और खुश था। लेखापरीक्षा पहले खुद को शहर से छिपा रहा था क्योंकि वह अपने द्वारा किए गए वादे पर खरा नहीं उतर सका था। लेकिन, शहर ने उसे देखा और खुशी से उसके पास आया और कहा "धन्यवाद प्रिय लेखापरीक्षक!" आप मुझे धन्यवाद क्यों दे रहे हैं लेखापरीक्षक ने कहा। ऐसा मैंने क्या किया? मैं तो तुम्हारी तरफ से विफल रहा हूँ! शहर ने हँसते हुए कहा कि मान्यवर, आप अपना महत्व नहीं जानते हैं; आपने वही कार्य किया है जो सबसे ज्यादा जरूरी था। उस दिन आपके साथ हुई बातचीत ने मुझे आश्वस्त किया था कि चीजें बदल जाएंगी और मैं बेहतर महसूस करने लगा। मैंने जितना चाहा था, तुमने उससे कहीं ज्यादा किया। परिवर्तन अपरिहार्य है। जिस पर आप भरोसा करते हैं उससे मिला आश्वासन किसी भी अन्य चीज से अधिक महत्व रखता है।

लेखापरीक्षक ने धन्यवाद किया और कहा कि तुमने मेरी आँखें खोल दी हैं। अब मैं अपना काम और अधिक ऊर्जस्विता के साथ करूँगा। लेखापरीक्षक और शहर ने भविष्य में इसी तरह की और कई अंतःक्रियाओं की आशा के साथ अपने अपने के रास्ते ले लिए। मैं भविष्य में ऐसे लेख लिखने की आशा के साथ कहानी को समाप्त करता हूँ और आने वाले समय में शहर के स्वास्थ्य के संबंध में आगामी प्रगति से आपको अवगत करवाता रहूँगा।
सुरक्षित रहें, स्वस्थ रहें।

-ओंकार, उप-महालेखाकार

टोंक रियासत के अनछुए पर्यटन स्थल

अपरिचित स्थानों, लोक जीवन का जाननें समझने एवं परखने की जिज्ञासा मनुष्य की स्वभावगत प्रवृति है और इस प्रवृति से ही 'पर्यटन' का आरम्भ हुआ है। स्थान विशेष पर व्यापार एवं शिक्षा का लाभ, मनोरंजन एवं पर्यावरण से सम्बंधित पूर्ण जानकारी की आकांक्षा ने पर्यटन की सोच को विस्तार दिया है। राजस्थान को सदियों से उसकी गौरव गाथा, सांस्कृतिक विरासत, तीर्थस्थलों, प्राकृतिक सौन्दर्य एवं ऐतिहासिक स्थलों के कारण देश-विदेश में सराहा जाता है किन्तु सामान्यतः पर्यटन सुप्रचारित नगरीय एवं महानगरीय पर्यटन केन्द्रों तक ही सीमित रह जाता है। असली भारत तो गावों में बसता है अतः प्रदेश के समृद्ध सांस्कृतिक स्वरूप से परिचय के लिए आवश्यक है कि पर्यटकों को उन ग्रामीण-स्थलों का भ्रमण करवाया जावे जो सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक रूप से समृद्ध किन्तु पर्यटन की दृष्टि से अनछुए है।

प्रस्तुत आलेख जयपुर से दक्षिण दिशा में लगभग 100 किमी .की दूरी पर बनास के किनारे बसे 'टोंक' क्षेत्र की पर्यटन सम्भावनाओं के विषय पर है। प्रत्येक दृष्टि से यह जिला दुनिया के पर्यटन मानचित्र पर अपना स्थान बनाने में सक्षम है। बनास इस शहर की शानदार परम्पराओं, सांस्कृतिक धरोहरों और साहित्यिक उपलब्धियों की साक्षी रही है। टोंक के पर्यटन स्थलों के विवेचना से पूर्व टोंक के इतिहास का एक संक्षिप्त उल्लेख आवश्यक है।

बनास व इसकी सहायक नदियों मासी, बांडी, बारी और दाई नदियों की घाटियों में हुए उत्खनन से पाषाण-कालीन पुरावस्तुएं प्राप्त हुई हैं। भरनी, संडेला, देवली, बथला, महुआ और टोंक से पुरा कालीन औजार भी मिले है। टोंक क्षेत्र में बसने वाले मूलनिवासी सम्भवतः मालव थे। मालव जाति अथवा इस के एक समुदाय का राजपूताने में आगमन पंजाब में इण्डोग्रीक कब्जे के पश्चात आरम्भ हुआ। मालवों ने यहां अपनी राजधानी 'मालवनगर' स्थापित की। यह टोंक के दक्षिण पूर्व में स्थित है जिसे अब नगर-फोर्ट के नाम से जाना जाता है। इस क्षेत्र में उत्खनन के दौरान मालव-सिक्के बडी संख्या में मिले हैं। कुषाणों के पतन के उपरांत मालवों ने अपनी शक्ति बढा ली किंतु शीघ्र ही इन्हें समुद्र गुप्त की अधीनता स्वीकार करनी पडी। चन्द्रगुप्त द्वितीय एवं कुमार गुप्त के राज्य-काल में ये अर्द्धस्वाधीन रहे किंतु पांचवी शताब्दी के अंत तक हूणों के आक्रमण से यह तहस नहस हो गये थे। तत्पश्चात् यह क्षेत्र मेवाड के गुहिल और शाकम्भरी के चव्हाण वंश के अधीन रहा।

वस्तुतः टोंक शहर 11वीं-12वीं शताब्दी में प्रकट हुआ। तब से ही यह अनेक राज-वंशों अधीन रहा। इस दौरान यहां अनेक महत्वपूर्ण निर्माण करवाये गए। राव जोगाजी सोलंकी ने अपने पुत्र की स्मृति में माणक चौक बसाया और टोंक का किला बनवाया जो भीमगढ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। कालान्तर में दीवाने खास और दीवाने आम बनाकर अमीर खान ने इस किले

का नाम अमीरगढ कर दिया था। 1441 ई. में एक 'पहाड़ी बावड़ी' खुदवाई गई और राव सातल देव ने 'चतुर्भुज तालाब' भी खुदवाया। इस तालाब के मध्य में नवाब अमीर खान के सेनापति लाल बहादुर सिंह की छतरी भी है। इसी समय एक अन्य तालाब खुदवाया गया जो आज 'कच्चा-बन्धा' के नाम से जाना जाता है।

समय-समय मुगल, उदयपुर, जयपुर और मराठों के अधीन रहे टोंक को 1817 ई. में एक संधि के द्वारा अंग्रेजो ने पिण्डारी नेता अमीर खां को सौंप दिया। इस प्रकार अमीर खां टोंक रियासत के प्रथम नवाब बने ओर 1948 ई. तक यह उन्हीं के वंशजों के अधीन रहा। स्पष्ट है कि 'टोंक' शहर उत्थान-पतन, लाव-लश्करों के विश्राम स्थलों, स्थापत्य कला-कौशल और साहित्य के गौरवशाली पडावों से गुजरा है। इनकी विरासत और निशानियां स्थानीय जनता के लिए तो यादगार है ही, आगन्तुक पर्यटकों के लिए भी दर्शनीय है।

अनुसंधानों के दौरान यहां हिन्दुस्तान की प्रथम मुस्लिम महिला शासक 'रजिया सुल्तान' की मज़ार मिली है। यद्यपि पुरातत्व विभाग ने अभी इसे प्रामणिक रूप से रजिया सुल्तान की मज़ार के रूप में स्वीकार नहीं किया है किन्तु ऐतिहासिक स्मारकों में रूचि रखने वाले जिज्ञासु पर्यटकों के लिए यह मज़ार निश्चय ही टोंक-भ्रमण का एक विशेष आकर्षण हो सकती है। 'रसिया की टेकरी' की तलहटी में बनी यह मज़ार धरातल से 3 मीटर उंचे चबूतरे पर बनी है। इस मज़ार पर बना अष्टपदी निशान और हिलाली महराब का नक्शा मध्यकालीन इमारतों से मिलता जुलता है। इस मज़ार से जुड़ा एक मज़ार और है जिसे याकूत की मज़ार माना जाता है। इस के तकिये पर वही निशानात हैं जो रजिया की मज़ार पर है।

इनके अतिरिक्त, टोंक में ऐसे पर्यटन-स्थलों की एक लम्बी श्रृखंला है जो आगन्तुक पर्यटकों के लिए निश्चय ही दर्शनीय है यथा-निवाई एवं चांदसेन की पहाड़ी में श्रृंगोजी की गुफा, बनेठा की छतरियां, निवाई के गंधक-कुण्ड, बहीर व काबरा की सुरंग, बगडी का किला, कालेखान के महल, चितौडीपोल, दादाबाड़ी, जुडवां मंदिर मस्जिद, पीपाजी का मंदिर एवं गुफा, रियासत कालीन हवेलियों के अलंकृत दरवाजे, टोडारायसिंह की बावडियां, टोरडी सागरबांध, बीसलपुर का बांध और मंदिर आदि।

बनास नदी के किनारे बसे 'टोंक' शहर के पर्यटन स्थल कलात्मक सौन्दर्य के साथ ऐतिहासिक रूप से भी महत्वपूर्ण है।टोंक से लगभग 22 किमी की दूरी पर पूर्व दिशा में गुमानपुरा गॉव की एक चट्टान पर एक विशाल हाथी निर्मित है। लोक मान्यता के अनुसार इसका निर्माण लगभग 1200 ई .में सवाई राम

सिंह ने करवाया था। इस गज के दाहिने कान पर लेख अंकित है जो आज भी पठनीय अवस्था में है। चलते हुए वाहन से देखने पर यह हाथी दौड़ता हुआ प्रतीत होता ।है यह **हाथी-भाटा** पर्यटकों को आकर्षित बनने में सक्षम है।

टोंक की एक अन्य प्राचीन कालीन इमारत जो पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत महत्व की है, वह है-जामा मस्जिद। टोंक के प्रथम नवाव अमीर खान ने इसे 1246 ई .में बनवाना आरम्भ किया था जो नवाब वजीरूद्दोला के समय 1297-98 ई .में पूर्ण हुई। यह भारत की सबसे विशाल एवं सुन्दर मस्जिदों मे एक है। इसकी ऊंची चारमीनारे काफी दूरी से भी दिखाई देती हैं। मुगल स्थापत्य शैली में निर्मित इस मस्जिद की दीवारें सुनहरी चित्रकारी एवं मीनाकारी से सुसज्जित हैं।

रियासत का दर्जा मिलने के बाद यहां के शासकों द्वारा निर्मित मस्जिद, मन्दिरों, बावडियो, महलों, कोठियों, छतरियों, सुरंगो व उद्यानो की ऐसी श्रृखंला है जो अपने स्थापत्य कलात्मक सौन्दर्य, चित्रांकन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। टोंक शहर में बडे कुएं के समीपस्थ **'सुनहरी कोठी'** विश्व विख्यात है। **'शीश महल'** के नाम से प्रसिद्ध इस कोठी की छतों एवं दीवारों पर रंगीन कांच एवं रत्न जडित सोने की बेलबूटियां और फूल अंकित है। इसमें पच्चीकारी एवं मीनाकारी का कलात्मक सौन्दर्य दर्शनीय है। अरावली श्रृखंला की टोंक स्थित पर्वतमाला की सबसे ऊंची चोटी पर बनी 'रसिया की छतरी' बहुत दूर से ही लोगो का ध्यान आकर्षित कर लेती है। लोककथा के अनुसार एक कायस्थ प्रेमी बिहारी लाल यहां बैठकर सदैव प्रेम गीत गाया करता था। सन् 1802 ई .में होल्कर द्वारा नियुक्त राज्यपाल अम्बाजी महाराज ने इस टेकरी का पुर्न निर्माण करवाया। जो स्वयं प्रेम गीतों के संयोजन के लिए जाने जाते हैं। पर्वतारोहण की व्यवस्था किए जाने पर यह स्थल पर्यटको की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि करने में सक्षम है।

टोंक शायरों और साहित्यानुरागियों का शहर रहा है। टोंक के तीसरे नवाब मोहम्मद अली खान ने 'अरबी और फारसी शौद्य संस्थान' की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यहां बडी संख्या में अरबी, फारसी और उर्दू ग्रन्थों का संग्रह है। साहित्य प्रेमी पर्यटक इस संस्थान

के दर्शन से अवश्य लाभान्वित होते है। टोंक शहर के अतिरिक्त इस जिले में सात तहसीले और दो उप तहसीले हैं जो सभी अपने इतिहास, संस्कृति, कला, धर्म और साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मालपुरा तहसील के एक कस्बे डिग्गी में विख्यात श्री कल्याण जी का मंदिर है। यहां के गढ एवं महल भव्य एवं कलात्मक है।

निश्चय ही प्रदेश की राजधानी के इतने निकट ऐतिहासिक और कलात्मक दृष्टि से समृद्ध 'टोंक' पर्यटन का एक महत्वपूर्ण 'गन्तव्य' हो सकता है। आवश्यकता यह है कि इन पर्यटन केन्द्रो का समुचित संरक्षण एवं संवर्द्धन किया जावे। इसके अतिरिक्त यह भी महत्वपूर्ण है कि इन्हें सुप्रचारित कर यहां तक पर्यटकों की यात्रा एवं प्रवास को सुगम एवं यादगार बनाया जावे।

-अनिता सुराणा, सह आचार्य, इतिहास
अतिथि रचनाकार

अलख जगे निज भाषा की, पहुंचे हर घर द्वार
तिमिर हरे अज्ञान का, करे ज्ञान प्रसार!
करे ज्ञान प्रसार, सब में अपनत्व जगाये
हिंदी का सामर्थ्य, कार्य यह कर पाए
परदेसी भाषा ने, सभी हम खूब ठगे
अब तो घर घर, निज भाषा की अलख जगे!

आरती का दीप (गीत रचना)

आरती का दीप बनकर,
मैं जला हूँ प्रार्थना में।
मैं हुआ अभिव्यक्त फिर से,
गीत की ही साधना में।
एक घण्टी-सी बजी और-
खोल आया द्वार मन के।
डूबकर फिर कल्पना में,
छोड़ आया प्राण तन से।
शब्द के स्वर में उतकर-
लीन हूँ आराधना में।
टूटती निस्तब्धता तो-
उभरते हैं स्वर प्रखर हों।
डूबते उत्तर कभी तो,
प्रश्न उठते हैं मुखर हो।
मौन के अन्तिम चरण में,
व्यक्त हूँ हर भावना में।
पीर से विगलित हृदय की,
अश्रु निमिलित वेदना में।
प्रेम में, करुणा में डूबी,
हर मृदुल संवेदना में।
सत्य में, शिव में मनोरम-
सुन्दरम् सद्भावना में।
गीत झंकृत है सदा से,
विश्व की नव चेतना में।
सूक्ष्म में, स्थूल में,
जड़ में हमारी चेतना में।
व्यक्त है अव्यक्त की,
अनुभूत हर संभावना में।

-सुरेन्द्र कुमार शर्मा, अतिथि रचनाकार

मेरी माँ

जब सुबह पहली नींद से जागा,
तब भी तेरा साया था।
पहली चोट जब लगी थी,
तो तुझे साथ पाया था।
सब मौके हाथ से निकल रहे थे,
तब भी तूने हाथ थामा था।
हार गया था जब,
तब आँसू तूने ही बहाया था।
जीता जब भी था मैं,
खुशी का गीत तूने ही गुनगुनाया था।
दुःख कितना भी मिला हो तुझे,
तूने कभी ना जताया था।
मेरी एक मुस्कान के लिए,
तूने पूरा घर सर पे उठाया था।
यारियाँ छूटी जब भी,
तब सिर्फ तू ही पूरा ज़माना था।
दूसरों के दुःख में उनका साथ देना,
तूने ही तो सिखाया था।
ऱोज किसी जरूरतमंद को एक मुस्कुराना बाँटना,
तेरी ही पलकों के नीचे सीखा था।
गम में भी मुस्कराना,
ऐसा करते मैंने तुझे बहुत बार देखा था।
गर्व है तू माँ है मेरी,
भगवान ने ये रिश्ता कुछ ऐसा ही बनाया था।
माँ है तू मेरी,
इससे ज्यादा शायद मुझे कुछ ना कहना था।

-राजुल कौशिक, अतिथि रचनाकार

अंगड़ाइयां

टूटने से पहले अंगड़ाइयां, छोड़ बिछोना चल देती वो
सूरज की लाली आंगन में आये, पहले ही परदे खीच देती वो
अपनी पायल की छाप छोड़ती, झटपट घर को समेटती वो
भूल गई इन सबके बीच , ख्वाब अपने संवारना
शीशे में फुर्सत से देखे, अपने आप को, हो गया जमाना
पगली है कहती है घर की मालकिन हूँ मै

कोई पूछे उससे
कब तुमने तसल्ली में पिछली बार खाना खाया था ?
कब तुमने मन पसंद की साड़ी पहनी थी ?
कब सजी थी तुम मन करके पिछली बार ?
पगली है, कहती है पिया की अर्धांगिनी हूँ मै

कोई पूछे उससे
कब तुमने साथ वक़्त बिताया था?
कब साथ बैठ कर हँसी खिलखिलाई थी ?
कब साथ बारिश में भीगी थी तुम पिछली बार ?

जागो अब इस घनघोर अँधेरे से स्त्री
अपना वजूद इस तरह खोने न दो
करो आजाद अपने आप को इस वहम से
तुम्हारे लिए ये आसमां पंख फैलाये खड़ा है
तोड़ो अपनी अंगड़ाइयां,
उठा के पंख, बस चल दो, बस चल दो ....

-शिवपाली खंडेलवाल, स. ले. प. अ.

पानी और बर्फ

हमारा समाज
कितनी विशालता लिए हुये है
असंख्य इकाइयाँ जब जुड़ती हैं
तब जाकर एक समाज बनता है
असंख्य स्त्री- पुरुष, बालक, वृद्ध
अधेड़, युवा अपने - अपने
अस्तित्व से एक समाज को
खड़ा करते हैं
विशालता प्रदान करते हैं

लेकिन आज हर समाज
पानी बनता जा रहा है
यानि पानी की तरह ढ़ीला
तरल, निराकार होता जा रहा है
पानी और बर्फ में अन्तर होता है
बर्फ जमी हुयी होती है
एकीकृत होती है और
पानी से ज्यादा ठोस होती है

हमारे समाज को बर्फ की तरह
होना चाहिए
नितान्त एकीकृत
संगठित, सुघड़ और स्थिर
बर्फ गलती है सिर्फ गर्मी से
ठंड में बर्फ गलती नहीं है
जमी रहती है, ठोस रहती है

समाज की प्रत्येक इकाई
जो समाज से जुड़ी हुई है
वह समाज को मजबूत करे
ताकतवर बनाये
समाज को संगठित करे, एकीकृत करे
समाज को सुदृढ बनाऐ
सुद्ढ समाज से ही
प्रगति एवं विकास संभव है
जाने कब हमारा समाज
पानी एवं बर्फ के अन्तर को समझेगा
जाने कब हमारा समाज
बर्फ की तरह ठोस एवं
एकीकृत बनेगा

-कैलाश आडवाणी, वरि. लेखाकार

निज भाषा उन्नति अहै,
सब भाषा को मूल,
बिनु निज भाषा ज्ञान के,
मिटै न हिय को शूल।
-भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

सड़क सुरक्षा: हमारी जिम्मेदारी

सड़क सुरक्षा एक बेहद गम्भीर एवं संवेदनशील मुद्दा है । एक छोटी सी भूल, जल्दबाजी या लापरवाही किसी व्यक्ति एवं परिवार को जीवनभर का जख्म दे जाती है । देश में प्रति वर्ष 1.50 लाख व्यक्तियों की मृत्यु सड़क दुर्घटनाओं में होती है और चार से पांच लाख व्यक्ति घायल होते है । इन हादसो का एक दुखद पहलू यह भी है कि देश में प्रति दिन 16 बच्चे इन दुर्घटनाओं में अपनी जान गंवाते है ।

भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा भी सड़क दुर्घटनाओं को गम्भीरता से लिया गया है और इनकी रोकथाम, सड़क सुरक्षा और बेहतर यातायात प्रबन्धन के लिये "सड़क सुरक्षा नीतियां" बनायी गयी है। नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन के लिये राज्य सरकार द्वारा विभिन्न हितधारक विभागों जैसे परिवहन, गृह, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वायत्त शासन, लोक निर्माण विभाग आदि को जोड़ा गया है और अल्प एवं दीर्घकालीन योजनाएं बनाकर सड़क दुर्घटनाओं की संख्या को न्यूनतम करने के प्रयास किये जा रहे है। इन विभागों के माध्यम से सड़क सुधार, सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान, सड़क सुरक्षा शिक्षा एवं प्रशिक्षण, ब्लैक स्पॉट की पहचान एवं सुधार, यातायात संकेतक लगाने आदि कार्यों के साथ-साथ बेहतर एवं शीघ्र चिकित्सा सुविधायें उपलब्ध करवाने हेतु ट्रोमा सेंटरों की स्थापना, दुर्घटनाओं के अनुसंधान एवं आंकड़ों के विश्लेषण जैसे कई महत्वपूर्ण कार्य किये जा रहे हैं। भारत सरकार द्वारा भी मोटर वाहन नियमों के उल्लंघन पर जुर्माने की राशि में भारी वृद्धि की गयी है, परन्तु फिर भी सड़क दुर्घटनाओं पर प्रभावी नियंत्रण नही हो पा रहा है ।

सड़क दुर्घटनाओं के वैसे तो बहुत सारे कारण हो सकते है परन्तु सबसे बड़ा कारण सड़क सुरक्षा संबंधी नियमों की जानकारी होते हुए भी उनका पालन नहीं करना है। अब समय है कि हम अपनी जिम्मेदारी को समझें, सड़क पर संयमित व्यवहार करें और सड़क सुरक्षा हेतु निर्धारित समस्त नियमों का पालन करें ।

(अ) क्या करें-

1. वाहन निर्धारित गति से चलायें ।
2. वाहन को निर्धारित लेन में चलायें ।
3. वाहन हेतु निर्धारित बैठक क्षमता के अनुरूप सवारी बैठाऐं ।
4. वाहन पंजीयन प्लेट को साफ और पठनीय दशा में रखें ।
5. यातायात नियमों, नियंत्रको और संकेतकों का पालन करें ।
6. आवश्यकतानुसार हाथ से संकेत दें ।
7. दो पहिया वाहन चालक भारतीय मानक संस्थान द्वारा विनिर्दिष्ट मानकों के हेलमेट का उपयोग करें और चार पहिया वाहन चालक सीट बैल्ट लगाऐं।
8. एक तरफा और दो तरफा ट्रैफिक की व्यवस्था में वाहन को बाँयी ओर चलायें।

9. चौराहों, दो सड़कों के संगम स्थल एवं पैदल पार पथ पर वाहनों की गति धीमी रखें।
10.वाहन चलाते समय वाहनों के मध्य में सुरक्षित दूरी बनाऐ रखें।
11.रात्रि दृष्टव्य दूरी और वाहन रोकने की दूरी को ध्यान में रखते हुए ही उचित गति से वाहन चलाऐं।
12.अत्यधिक प्रकाश वाली लाइटों (हाईबीम) का प्रयोग केवल निर्धारित स्थानें पर ही करें।
13. हॉर्न का उपयोग केवल आवश्यकता होने पर ही करें तथा शान्त क्षेत्रों में उन्हें नहीं बजायें। तीव्र आवाज वाले एवं यातायात के सुगम आवागमन में बाधा डालने वाले ध्वनि यंत्रों का उपयोग नहीं करें।
14. वाहन को निर्धारित स्थान पर ही पार्क करें और पार्किंग लाईट का प्रयोग करें।

(ब) क्या नहीं करें-

1. नशे में वाहन नहीं चलाऐं।
2. शारीरिक या मानसिक रूप से वाहन चलाने में असमर्थ होने पर वाहन नहीं चलायें।
3. खतरनाक तरह से या आड़े-तिरछे तरिके से वाहन न चलायें।
4. स्टॉप लाइन का उल्लंघन नहीं करें।
5. वाहन चलाते समय मोबाइल या ईयर-फोन का उपयोग नहीं करें।
6. वाहन में खतरनाक पदार्थों (विस्फोटक एवं अत्यंत ज्वलनशील) का परिवहन नहीं करें।
7. ट्रैफिक के सुगम आवागमन में बाधा न डालें।
8.अनाधिकृत व्यक्ति को वाहन चलाने की अनुमति नहीं दें ।
9. असुरक्षित स्थिति के वाहन को नहीं चलायें ।

(स) वाहन चलाते समय निम्न मूल दस्तावेज अपने पास हार्ड या सॉफ्ट कॉपी (डिजी लॉकर या एम परिवहन) में रखें तथा सक्षम प्राधिकारी द्वारा मांगने पर उन्हें दिखावें-

1. वाहन का पंजीयन प्रमाण पत्र ।
2. वैध बीमा ।
3. वैध प्रदूषण नियंत्रण प्रमाण पत्र ।
4. परिवहन वाहन होने पर परमिट एवं फिटनेस प्रमाण पत्र ।

प्रिंट एवं इलेक्ट्रोनिक मीडिया में इस तथ्य को बार-बार बताया जा रहा है कि “कोरोना” महामारी से जितनी जन हानि हुई है उससे अधिक जन हानि प्रतिवर्ष सड़क दुर्घटनाओं से हो जाती है। महामारी से बचाव के लिए हम केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा जारी दिशा निर्देशों का पालन कर रहे हैं। उसी प्रकार हम वाहन चलाते समय सुरक्षा नियमों का पालन करें और सड़क दुर्घटनाओं से होने वाली मृत्यु, शारीरिक अपंगता, जख्मों और आर्थिक परेशानियों से बचें। ध्यान रखें कि सड़क पर आपका गलत व्यवहार न केवल दूसरों को बल्कि स्वयं आपको भी क्षति पहुँचा सकता है। यह भी याद रखें कि आपका परिवार घर पर आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।

-दिनेश कसेरा, व.ले.प.अ.

खनिजों का संसार- मरूधरा राजस्थान-लेखापरीक्षा की नजर से

राजस्थान जिसे मरूधरा के नाम से भी भारत वर्ष में जाना जाता है वास्तव में खनिजों की अकूत सम्पदा से परिपूर्ण है। राज्य में विभिन्न प्रकार के 81 खनिज पाये जाते हैं उनमें से वर्तमान में 57 खनिजों का उत्पादन हो रहा है। इन खनिजों में लेड-जिंक, वोलेस्टोनाईट, केल्साइट, सेलेनाईट व जेस्पार का शतप्रतिशत और चांदी, जिप्सम, रॉक फास्फेट एवं ऑकर का 90 प्रतिशत से अधिक उत्पादन राजस्थान में ही होता है। संगमरमर एवं ग्रेनाईट की सर्वाधिक किस्में राजस्थान में पाई जाती हैं। तांबे के उत्पादन के लिये भी राजस्थान राज्य को जाना जाता है। वर्ष 2019.20 में खान एवं भू-विज्ञान विभाग ने 4338.47 करोड का राजस्व प्राप्त किया। इनके अतिरिक्त राजस्थान में पैट्रोलियम, प्राकृतिक गैस तथा यूरेनियम भी उपलब्ध है। राजस्थान राज्य में प्रधान खनिज जैसे कि जिंक, तांबा आदि के खनन के लिये 185 खनन पट्टे तथा अप्रधान खनिज जैसे कि पत्थर, संगमरमर, ग्रेनाईट, जिप्सम आदि हेतु लगभग 32,535 छोटे बडे खनन पट्टे प्रभावशाली हैं।

राज्य में खनिजों की खोज व उनके व्यवस्थित दोहन हेतु खान एवं भू-विज्ञान विभाग की स्थापना वर्ष 1949 में की गई थी। इस का निदेशालय उदयपुर में स्थित है। खनिज प्रशासन राजस्व संकलन, पर्यावरण संरक्षण अवैध खनन एवं परिवहन की रोकथाम आदि कार्यो हेतु राज्य को चार क्षेत्र/जोन्स में बांटा गया है जिनके अधीन 49 कार्यालय खनि अभियन्ता/सहायक खनि अभियन्ताओं के है।

वैध खनन से जहाँ राज्य को राजस्व मिलता है वहीं अवैध खनन से राजस्व का नुकसान भी होता हैं जिससे अपराधी तत्वों को बढावा मिलता है साथ ही पर्यावरण को अपूरणीय क्षति भी पहुँचती है। राज्य में अवैध खनन एक बहुत ही बडी समस्या है। आए दिन समाचार पत्रों में अवैध खनन और परिवहन के मामलें हम सब के सामने आते है। खान एवं भू-विज्ञान विभाग ने वर्ष 2019-20 में 13,154 केस अवैध खनन/परिवहन/भण्डार के पकडे थे और उनसे 80.16 करोड वसूल किये थे।

वैध खनन को बढावा देने और उनके सुचारू संचालन हेतु विभाग ने कम्प्यूटराईजेशन की प्रक्रिया को आगे बढाया। दिनांक 10/10/2017 से समस्त खनिज निर्गमन को ऑन-लाइन कर दिया गया है। खनिजों का सही वजन तौला जावे इस लिये विभाग ने तुला-कांटों/वे-ब्रिजों को भी एम्पेनल्ड किया है तथा इन्हें मोबाइल एप्प के जरिये विभागीय ऑन लाइन सिस्टम से जोडा गया है। सभी वे-ब्रिजों पर दो कैमरे लगाया जाना अनिवार्य किया गया है जिससे की वाहन की फोटो ली जाती है और ई-रवन्ना फोटो युक्त जारी होते हैं। इससे राजस्व अपवंचन की संभावना कम हुई है।

लेखापरीक्षा में नवाचार

खान एवं भू-विज्ञान विभाग की लेखापरीक्षा हमारे लिये एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। लेखापरीक्षा हेतु विभागीय ऑनलाइन सिस्टम का लॉगइन आईडी सभी लेखापरीक्षा दलों को उपलब्ध कराया गया है जिससे की ऑन लाइन सूचनाये लेखापरीक्षा दलों को आसानी से उपलब्ध हो जाती है। अवैध खनन का पता लगाया जाना एवं उसको प्रमाणित किया जाना अति दुष्कर कार्य है लेकिन आधुनिक तकनीक का उपयोग करने से यह कार्य भी अब संभव हो रहा है। महालेखाकार कार्यालय कर्नाटक ने रिमोट सेंसिग तकनीक का उपयोग कर के स्वीकृत खनन पट्टा क्षेत्रों के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में हुए अवैध खनन को चिन्हित किया है। गूगल अर्थ प्रो ऑनलाइन एप्लीकेशन है और गूगल पर फ्री एप्लीकेशन के रूप में राजस्थान राज्य में भी उपलब्ध है तथा इसको उपयोग में लेकर अवैध खनन क्षेत्रों का पता लगाया जा सकता है।

इस प्रक्रिया में सबसे पहले किसी एक क्षेत्र/तहसील को चिन्हित किया जाना चाहिए उसके बाद उस क्षेत्र में स्वीकृत सभी खनन पट्टों के कोर्डिनेटस प्राप्त किये जाने चाहिये। कोर्डिनेटस से आशय पट्टों की भौगोलिक स्थिति से है जो कि अक्षांश और देशांतर रेखाओं के अनुसार प्रदर्शित होते है। ये कोर्डिनेटस विभाग के ऑनलाइन एप्लीकेशन (डीएमजीओएमएस)पर उपलब्ध है। चयनित क्षेत्र/तहसील के सभी खनन पट्टों के कोर्डिनेटस गूगल अर्थ प्रो एप्लीकेशन पर टैग किये जाने चाहिये। इसके पश्चात विभिन्न समयावधि की इमेजों का सूक्ष्म अवलोकन करने पर अवैध खनन के क्षेत्र चिन्हित किया जा सकता है। इस तरह से चिन्हित क्षेत्रों की जानकारी विभाग को लेखापरीक्षा ज्ञापन के माध्यम से दी जावे तथा उनके उत्तर के आधार पर आगामी कार्यवाही की जावे।

लेखापरीक्षा कौशल में उन्नयन हेतु सतत अध्ययन एवं नवीन तकनीक की जानकारी अत्यावश्यक है। इसलिये हम सब को नवीन तकनीक को अपनाना चाहिये। उपरोक्त लेख नवीन तकनीक का एक संक्षिप्त परिचय मात्र है।

-शैलेन्द्र शर्मा, व.ले,प.अ.

मां थोड़ा अपने लिए भी जियो न

बेटी, बहन, बहू और पत्नी की भूमिका निभाने के बाद जब एक स्त्री 'मां' की भूमिका में आती है तो लगता ही नहीं कि यह वही इंसान है जिसने कभी बेटी बनकर अपने मां-बाप से कोई जिद की थी, बहन बनकर भाइयों से हर बात में बराबरी की थी, बहू से नखरे दिखाए थे और पत्नी के रूप में अपनी इच्छा के रूप में हर बात पूरी करवाई थी। अब उसकी जिद है तो बच्चों की जिद पूरा करने की, उसकी बराबरी की सोच है तो बच्चों में प्यार के बराबर बंटवारे के लिए, नाज-नखरे तो अब वो बस बच्चों के उठाती है और अपनी हर इच्छा को उन्हीं के लिए उस ताक पर जा रखा है जहां से वह कभी उतरती नहीं थी। कहते हैं भगवान हर कहीं नहीं पहुंच सकता इसलिए उस ने मां को बनाया। क्या खूब कहा है, मां को भगवान का दर्जा देकर उसे पवित्र, पूजनीय तो रखा, लेकिन साथ ही बड़ी ही खूबसूरती से इंसान की तरह हर सुख-दुख औ रअपने लिए कुछ चाहने की इच्छा से वंचित भी क दिया, क्योंकि भगवान को किस बात की कमी, इंसान होने का आनन्द ही उससे छीन सा लिया। अगर बच्चे कुछ सोचें और मां को कुछ 'स्वार्थी' बनाने का जतन करें तो शायद उसे भी फिर वह खुशी मिल सके जिसे उसने भी कभी जिया था। और बच्चों से...

किसी भी बहाने से, साल में एक ही दिन सही अगर उस मां को बचपन से आज तक उम्र के हर पड़ाव पर सोई और खोई उसके व्यक्तित्व के इन रंगों की टोकरी को ताक से उतार कर उस की गोद में रख सकें तो उसके चेहरे का नूर उसे और आपको यह दिन यादगार बना देगा। अगर बात गंभीर हो गई हो या समझ ना मुश्किल हो तो आज एक दिन मांको जिद करने का मौका दें, उसे बराबरी करने का मौका दें, उसके लिए नखरे की गुंजाइश पैदा करें और इच्छाओं की गांठ खुल जाने दे। यह हर सयाने हो चुके बच्चे की जिम्मेदारी भी है क्योंकि छोटा बच्चा तो ये मौके उसे अक्सर देता ही रहता है,कमी तो सयानों से ही होती है जो उस 'छत' को शायद ही कभी याद करते हैं, जो दुनिया में सब से मजबूत कवच है।

सच कहें 'खुदसे' एक बार मां बनने के बाद आपको अपने पैशन, अपनी रुचियों का त्याग करने की जरूरत कतई नहीं है। यह बहुत जरूरी है कि आप हर उस चीज के लिए वक्त निकालें, जिसे करना आपको बेहद पसंद है।चाहे वह लिखना-पढ़ना हो, व्यायाम करना हो, चित्रकारी करना हो या फिर नृत्य करना। इन्हें अपनी प्राथमिकताओं में शामिल करें और अपने रुटीन में शामिल करने का जरिया तलाशें। आपकोलग सकता है कि कहना आसान है, करना बहुत मुश्किल है लेकिन कमसेकम से आप कोशिश तो कर सकती हैं, भले ही इससे पहले आपने इन्हें करने का कोई प्रयास नहीं किया हो। यदि आप अपनी जरूरतों का ध्यान रखेंगी तो आप खुश रहेंगी और अच्छी मां की तरह काम कर पाएंगी।

बलिदान: अस्तित्व की कीमत पर नहीं बच्चे कभी इस चीज के लिए नहीं कहते, उन्हें इसकी जरूरत भी नहीं होती और वे शायद कभी चाहेंगे भी नहीं कि उन्हें मातृत्व का वह सुख मिले, जिसे उनकी मां खुद को शहीद करके दे। आपको कुछ वक्त खुद के लिए चाहिए? बच्चों को

एक घंटे टीवी देखने दें और अपनी पसंद की किताब पढ़ लें या अपनी पसंद का कोई काम करें। अगर आपको लगता है कि आप अपने दोस्तों से बहुत दिनों से नहीं मिली हैं तो बच्चों को उनके पापा के पास छोड़ें और कहने का मतलब यह है की अपने आपको जरूरत से ज्यादा थका लेना न आपके लिए अच्छा है और न ही आपके बच्चों के लिए।

परफेक्शन: न संभव न जरूरत

यह वैसे भी जिंदगी का सामान्य नियम है। परफेक्शन की तलाश हमेशा एक बुरा आयडिया है क्योंकि जिंदगी बहुत ही उलझी हुई, हैरान कर देने वाली और ऐसी है जिसके बारे में हम पूर्वानुमान नहीं लगा सकते। अगर आप इससे परफेक्ट बनाने की कोशिश करेंगी, इस पर पूरा नियंत्रण चाहेंगी तो यह असंभव है और आप इस लक्ष्य को कभी हासिल नहीं कर पाएंगी। एक बार जब आप मां बन जाती हैं तो फिर जिंदगी और भी उलझन भरी बन जाती है इसलिए यह बहुत जरूरी हो जाता है कि आप पर फेक्ट बनने की कोशिश बिल्कुल छोड़ दें। आपको यह स्वीकार करना होगा कि घर कई बार गंदा भी रह सकता है, कई बार आपको बाहर से भी खाना मंगाना पड़ सकता है और कई बार बच्चों को सब कुछ खुद ही मैनेज भीकरना पड़ सकता है।

ग्लानि: एक साइड इफेक्ट

ग्लानि मातृत्व का सब से सामान्य साइड इफेक्ट है। कई बार मुझे भी बहुत ग्लानि होती है और कई बार तो रोज होती है। ग्लानि होती है तो कोई आपकी मदद नहीं कर पाता और यह पूरी तरह से समय और ऊर्जा की बर्बादी है। आपको एक फैसला लेना ही होता है। जैसे आपने घर पर रहना है या काम काजी महिला बनना है, एक बहुत बड़ा फैसला होता है। इसके अलावा कुछ छोटे फैसले भी होते हैं, जैसे बच्चों को टीवी देखने बैठाकर अपने लिए कुछ करना है। हमेशा अपने लिए सेकंड गैस कर ना छोड़ें। आप बेस्ट कर रही हैं, कोई पर फेक्ट नहीं है और गलतियां आप से भी हो सकती हैं। बस, बच्चों की आधारभूत जरूरतों को पूरा करती रहें।

छोटे बच्चे: बड़ा काम

बच्चों को बड़ा करना एक बहुत ही मुश्किल काम है। बच्चे शोर मचाते हैं, चीजें फैलाते हैं और उन की मांग कभी खत्म नहीं होती। हां, हो सकता है कि ऐसे बहुत से मौके आएं, जब आप अपना धैर्य खो दें। मुझसे भी ऐसा कई बार हो जाता है लेकिन एक लंबी सांस लें। बच्चों को छोटे लेकिन मदद की तलाश में बैठे लोगों की तरह लें।

समस्या में समाधान

बच्चों की सुनना एक मां के लिए वाकई बेहद मुश्किल होता है। हम हमेशा यह मानकर चलते हैं कि हम अपने बच्चों से बहुत ज्यादा जानते हैं। ठीक है, यह कुछ हद तक सही भी है, इसलिए हम उनकी बात की इतनी परवाह भी नहीं करते और न ही उन्हें सुनना चाहते हैं।

इसके अलावा हम हमेशा ऐसा व्यवहार करते हैं, मानो हमारे पास तो हर समस्या का हल है, सलाहों का भंडार है। कईबार बच्चे हमें कुछ बताते हैं, हम तुरंत उस समस्या का समाधान बता देते हैं, जबकि बहुत बार उन्हें किसी समाधान की जरूरत ही नहीं होती, वे तो बस चाहते हैं कि हम उन्हें केवल सुनें।

उनकी मां बनें, दोस्त नहीं

यह आपको थोड़ा अजीब लग सकता है क्योंकि अब तक आपने यही जाना है कि बच्चों का दोस्त बनना चाहिए। आपको हमेशा सीमाएं तय करने की जरूरत है। हमारी पुरानी पीढ़ी के लिए यह कुछ आसान था।बच्चे, बच्चेथे, घर में हर कोई बड़ों की बात सुनता था और उसे मानता था। आज के परिवार कहीं ज्यादा लोकतांत्रिक हैं। हम परिवार के अहम फैसले मिल-जुल कर लेते हैं। घर में महिलाओं की सुनी जाती है। यह बहुत अच्छी बात है लेकिन बच्चों को यह जता दें कि आप उनकी सुनती हैं, उनकी इज्जत करती हैं लेकिन आप उनकी हम उम्र नहीं है। हमारा काम, हमारा रोल उनकी मां का है, न कि उनके दोस्त का।

सरल रहें, सरलता सिखाएं

अगर आप ऐसा करती हैं तो यह आपके और बच्चों, दोनों के लिए बहुत बड़ा काम होगा। याद रखें, बाहरी चीजें खुशी नहीं दे सकतीं, न आपको और नही आपके बच्चों को। फिर बच्चे भी छुटपन में ही मां-बाप की सुनते हैं, इसलिए अगर आपके बच्चे बहुत छोटे हैं तो आप बहुत ही खुश किस्मत हैं और अभी से शुरुआत कर दें। अपने आपको और बच्चों को बताएं कि आप लोगों को सभी चीजों की जरूर तन हीं है। शॉपिंग को अपने और उनके लिए फन मत बनाइए। आप कोई भी चीज तभी करती हैं, जब आपको वाकई उसकी जरूरत होती है। चीजों को रीयूज करना सिखाइए।

उनके साथ हँसे

मां होने की वजह से आप अपने बच्चों की देखभाल में इतना डूबी रहती हैं कि आप आराम करना और हंस-हंसाना ही भूल जाती हैं लेकिन बच्चे मजेदार होते हैं। वे आपको एक बार फिर से अपना बचपन जीने का मौका देते हैं। कुछ ऐसी चीजें होती हैं, जो कि बड़े होने पर कभी नहीं करतीं। जैसे पानी में कूदना आदि। बच्चों की मासूमियत के जरिए दुनिया को फिर से देखें। आपने कई सालों से तितलियों को नहीं देखा होगा और नही उनके पीछे भागी होंगी लेकिन बच्चों के साथ उनके साथ उनकी दुनिया में रहेंगी तो आपको एक बार फिर से बच्चा बनने का मौका जरूर मिलेगा।

-शालिनी अग्रवाल, अतिथि रचनाकार

भारतीय साहित्य एवं संस्कृति में नारी का स्थान

'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता' इस प्रकार के स्मृतिवाक्य नारी की गरिमामय उपस्थिति तथा स्वाभिमानी अस्तित्व के अभिव्यंजक हैं। वैदिक काल, उत्तरवैदिक काल, सूत्र काल, स्मृति काल, साहित्य काल के सभी साहित्य ग्रंथों में नारी की उन्नत स्थिति तथा उसे प्राप्त प्रतिष्ठित पदों एवं उसके विभिन्न अधिकारों की चर्चा प्राप्त होती है। नर और नारी दोनों ही सृष्टि के आरंभ के हेतुभूत कारक हैं। मनु और शतरूपा दोनों के बिना सृष्टि आगे वृद्धि को प्राप्त नहीं कर सकती थी। यदि दो से ही मिलकर एक बनना है अतः कौन एक श्रेष्ठ है यह प्रश्न ही नहीं उठता।

यदि कौन एक श्रेष्ठ है यह प्रश्न नहीं उठता तो कौन निकृष्ट है अथवा कुछ कम है इस प्रकार का भी प्रश्न नहीं उठता। तो नर और नारी दोनों समान हैं यह बात तो निर्विवाद स्वीकृत की जानी चाहिए। पुरुष प्रधान है या नारी प्रधान है यह प्रश्न ही असंगत सिद्ध हुआ। हाँ, स्वयं स्वयंभू शिव शंकर ने नारी को स्वयं से अधिक प्रतिष्ठित स्थान प्रदान करते हुए अपने वामांग में धारण करके अर्धनारीश्वर रूप देकर पुरुष और स्त्री के भेद को समाप्त कर दिया है तथापि नारी को किंचित अधिक सम्मान दिया जाना उचित ही है क्योंकि वह पुरुष से आधृत वीर्य को अंडरूप में अपनी कोख में धारण करके 9 माह तक अपने शरीर की ऊर्जा से उसका सेचन करती है और मनुष्य रूप में उसे जन्म देती है। जगत को आगे बढ़ाने का जो यह सामर्थ्य नारी को ईश्वर ने प्रदान किया है जीव की उत्पत्ति का सामर्थ्य जो कि उसका वैशिष्ट्य है जन्म के उपरांत उस शिशु को अपना दूध पिला कर जगत में प्रवृत्त होने का जो सामर्थ्य वह प्रदान करती है शिशु का पालन पोषण अध्ययन संस्कार आदि अनेकों कर्तव्यों का बिना किसी आदेश के मातृत्व के वशीभूत होकर स्व-प्रेरणा से जो आजीवन निर्वहन करती है, एतदार्थ वह निश्चित रूप से सम्मान की पात्र है।

नारी पद के मैना, जाया, स्त्री, सुंदरी, जनि, वधू, पुरंध्री, दंपती, पत्नी आदि अनेकों पर्याय उसके कर्म के अनुरूप बनते हैं। निरुक्त जैसे परम श्रेष्ठ निर्वाचन ग्रंथ में स्त्री पद को शब्द -स्पर्श- रूप -रस -गंध जैसे गुणों का विकास करने वाली होने के कारण स्त्री कहा गया है। सामाजिक तथा सार्वविध दशाओं की दृष्टि से नारी जाति के लिए वैदिक काल स्वर्णिम काल रहा। विभिन्न संवाद-सूक्त यथा सरमा- पणि, यम- यमी, विश्वामित्र- नदी आदि में स्त्रियों को पुरुषों से भी परम विदुषी बताया गया। वैदिक -काल में नारी अपनी इच्छा से वर का वरण करती थी। माता-पिता की अनुमति से उसे गंधर्व विवाह की अनुमति प्राप्त थी। वह घर की साम्राज्ञी कहलाती थी।

सम्राज्ञी श्वशुरे भव सम्राज्ञी श्वश्रवां भव। (ऋग्वेद10-85-46) वैदिक काल में ही विधवा विवाह, पुनर्विवाह का प्रमाण भी प्राप्त होता है। पति की मृत्यु के उपरांत देवर से विवाह सभ्यता विस्तार की दृष्टि से स्वीकृत था। विपश्यला जैसी कुशल योद्धा नारियों का वर्णन इस बात का प्रमाण है कि उन्हें युद्ध में भी भाग लेने का अधिकार प्राप्त था। धार्मिक कार्य भी नारी के बिना कदापि पूर्ण नहीं होते थे। यज्ञ आदि अनुष्ठानों में अग्नि प्रज्वलन भी जोड़े से ही करने का विधान प्राप्त होता है। उपनीत नारी पुरुष के समान वेद अध्ययन की भी अधिकारी होती थी। विवाह और शिक्षा में समान अधिकार प्राप्त होने के साथ ही अविवाहित पुत्री का पिता की संपत्ति पर तथा विवाहिता का पति की संपत्ति पर पूरा अधिकार बताया गया है। विवाह के उपरांत वह सास-ससुर, ननंद, देवर, पति तथा घर के उपस्थित अन्य सदस्य, सभी का ध्यान रखती थी। अतः पारिवारिक तथा सामाजिक निर्णयों में भी उसका समुचित सम्मान किया जाता था।

उत्तर वैदिक काल में धीरे-धीरे नारी की शिक्षा व्यवस्था घर में ही की जाने लगी जिससे उसका सामाजिक सम्मान कुछ न्यून हो गया। पिता की संपत्ति पर से उसका अधिकार कम होने लगा। पुत्री को दुख का कारण भी कहा जाने लगा। उच्च वर्ग की कन्याएं विधिवत उपनीत होकर अध्ययन कर सकती थी किंतु निर्धन वर्ग वेद अध्ययन से वंचित होने लगा। सूत्र काल आते-आते नारी की दशा और भी चिंताजनक होने लगी सूत्र काल में बाल विवाह आरंभ हुए। शिक्षा प्राप्ति पर से नारी का अधिकार कम होने लगा। दहेज प्रथा का प्रचलन प्रारंभ हो गया। मां के रूप में स्त्री को अत्यंत सम्मानित स्थान अभी भी प्राप्त था किंतु पिता की संपत्ति में से पुत्री के अधिकार को हटा दिया गया।

स्मृतिकाल नारियों की उन्नति की दृष्टि से उत्कृष्ट भी रहा और निकृष्ट भी रहा कुछ स्थलों में नारी को अत्यंत प्रतिष्ठित पद और सम्मान दिया गया। महाभारत के आदि पर्व में जहां भार्या को आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक संतापों से तारने वाली बताया गया है। ***भार्या मूलं त्रिवर्गस्य भार्या मूलं तरिष्यतः*** (महाभारत आदि पर्व 74/70) इसके विपरीत महाभारत के ही अनुशासन पर्व में नारी को वश में रखने का उल्लेख भी प्राप्त होता है ***न हि स्त्रिभ्यः परं पुत्रः पापीयस्तरमस्ति वै। क्षुरधारां विषम् सर्पो वह्निरित्येकतः स्त्रियः।।*** (महाभारत अनुशासन पर्व 40/4)

एक नारी जन्म लेते ही पुत्री, बहन, भतीजी, पोती, मौसी, बुआ जैसे अनेक सामाजिक नामों से जानी जाती है। विवाह संस्कार के उपरांत पत्नी माता चाची नानी दादी जैसे पद उसे प्राप्त होते हैं। प्रत्येक पद की अपनी गरिमा, दायित्व और कर्तव्य होते हैं। कहीं ना कहीं समाज के संरक्षण, सांस्कृतिक हस्तांतरण और सामाजिक व्यवस्थाओं को अनुकूल और अनुशासित रखने का दायित्व भी स्त्रियों का ही रहता है।

माता का दायित्व निभाते हुए स्त्री एक सखी, बहन, उपाध्याय, आचार्य जैसे अनेक दायित्वों को निभाती है। पाणिग्रहण के उपरांत पत्नी को अर्धांगिनी, जाया, भार्या जैसे नामों से बुलाया जाता है। धर्मशास्त्रों में तो पत्नी को ही घर कहा गया है। ***गृहिणी गृहम् उच्यते।***

सभी पात्रों के रूप में नारी को दया, प्रेम, करुणा और सहनशीलता की प्रतिमूर्ति बताया गया है। वेदों में लोपामुद्रा, घोषा, अपाला, सरमा, विश्ववारा, रोमा आदि मंत्रदृष्टा ऋषिकाओं के नाम प्राप्त होते हैं तथा उपनिषदों में गार्गी, मैत्री जैसी परम विदुषियों का उल्लेख प्राप्त होता है। इन सभी प्रसंगों से स्पष्ट है कि भारत में नारी को उच्च एवं सम्मानजनक प्रतिष्ठित पद प्राप्त था।

-डॉ रानी दाधीच, अतिथि रचनाकार

राजस्थान प्रदेश की अनुपम झलकियाँ

राजस्थान राज्य, जो भारत के उत्तरी भाग में स्थित है अपने प्राचीन इतिहास एवं अद्भुत किलों की भूमि के लिए बहुत प्रसिद्ध है। यह वर्तमान में भारत का सबसे बड़ा राज्य है, जो पहले राजाओं की भूमि होने के कारण राजपूताना के नाम से जाना जाता था। इस प्रदेश को स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात कानूनी रूप से राजस्थान के नाम से जाना जाने लगा। हालाँकि, इस प्रदेश के लिए 'राजस्थान' शब्द का सबसे पहले प्रयोग कर्नल जेम्स टॉड ने 1829 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'द एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान अथवा सेंट्रल एंड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया' में किया।

राजस्थान, भारत के सबसे खूबसूरत राज्यों में से एक है, इसलिए यहां की संस्कृति दुनिया भर में सुप्रसिद्ध है। राजस्थान की अनुपम सांस्कृतिक विरासत के निर्माण एवं विस्तार में विभिन्न समुदायों और शासकों का रचनात्मक योगदान रहा हुआ है। आज भी जब कभी राजस्थान का नाम लिया जाए तो हमारी आखों के आगे थार रेगिस्तान, ऊंट की सवारी, घूमर और कालबेलिया नृत्य और रंग-बिरंगे पारंपरिक परिधान इत्यादि की झलकियाँ स्मृति पटल पर अंकित होने लगती हैं। राजस्थान के गांवों में लोग प्रायः धोती, पगरका और रंग-बिरंगे साफे पहनते थे, जो आजकल बदलते परिदृश्य में लुप्त होने के कगार पर आ चुके हैं। हालाँकि, वर्तमान में भी पश्चिमी राजस्थान के महिला और पुरुषों की जीवन शैली में उनकी पारम्परिक वेशभूषा के रूप में रंग-बिरंगे परिधानों को अधिकता के साथ देखा जा सकता है। इसके कारण ही राजस्थानी वेशभूषा प्रदेश को रंगीले राजस्थान में परिभाषित करती है।

यह प्रदेश अपने सभ्य स्वभाव और शालीन मेहमान नवाज़ी के लिए भी देशभर में जाना जाता है। यहां की संस्कृति तो किसी भी पर्यटक का चुटकियों में मन मोह लेती है, चाहे वह देशी हो या विदेशी। आखिर किसका मन नहीं करेगा की वह रात के वक्त रेगिस्तान में अलाव (आग) जलाकर कालबेलिया नृत्य को देखने के अवसर का लाभ नहीं उठाये। जिन पर्यटकों ने शाही राजस्थान की संस्कृति का अनुभव किया है वो बहुत भाग्यशाली हैं। सिर से लेकर पांव तक, पगड़ी, कपड़े, गहने और यहां तक कि जूते भी राजस्थान की आर्थिक और सामाजिक स्थिति को दर्शाते हैं। सदियां बीत जाने के बाद भी यहां की वेशभूषा अपनी पहचान बनाये हुए है। राजस्थान की जीवन शैली के आधार पर अलग-अलग वर्ग के लोगों के लिए अलग-अलग परिधान के अंतर्गत पगड़ी यहां के लोगों की शान और मान का प्रतीक है।

राजस्थान आज विभिन्न क्षेत्रों में विकास के पथ पर तीव्रता के साथ अग्रसर होता जा रहा है। सबसे सकारात्मक बात यह है कि यह प्रदेश आगे बढ़ता हुआ भी अपनी परम्परागत संस्कृति से बँधा हुआ है। फ्लोराइट, जास्पर, संगमरमर, जिप्सम, रॉक फॉस्फेट, चाँदी, सीसा-जस्ता, टंगस्टन, घीया पत्थर, तामड़ा आदि खनिजों के उत्पादन में राजस्थान को देश में एकाधिकार प्राप्त है। यहाँ पर एक तरफ तो गाँवों की सभ्यता हैं तो दूसरी तरफ जयपुर, जोधपुर,

उदयपुर, कोटा आदि महानगर भी विद्यमान हैं जो प्राचीन परम्परा और नवीनता के जीवन्त द्योतक हैं। प्राचीन हस्तकलाओं के साथ-साथ नये और विशाल उद्योग भी इस प्रदेश में स्थापित किए गए हैं। हरी सब्जियों की कमी होने की वजह से राजस्थानी व्यंजनों की अपनी एक अलग ही शैली है। राजस्थानी व्यंजनों को इस तरह से पकाते हैं कि वो लंबे समय तक खराब नहीं होते तथा इन्हें गरम करने की आवश्यकता भी नहीं होती। रेगिस्तानी जगहों जैसे - जैसलमेर, बाड़मेर और बीकानेर में दूध, छाछ और मक्खन का अधिक प्रयोग किया जाता है। राजस्थान में अधिकतर खाना शुद्ध घी से तैयार किया जाता है। यहां पर दाल-बाटी-चूरमा बेहद मशहूर है। जोधपुर की मावा कचौड़ी, जयपुर का घेवर, अलवर का कलाकंद और पुष्कर का मालपुआ, बीकानेर के रसगुल्ले, नमकीन भुजिया, दाल का हलवा, गाजर का हलवा, जलेबी और रबड़ी विशेष रूप से प्रसिद्ध है। भोजन के बाद पान खाना भी यहां की परंपरा में शामिल है।

राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र में स्थानीय लोगों के साथ-साथ पूरी दुनिया के लिए जादू करने की अपनी अनोखी कला भी विद्यमान है। थार की शांति के अलावा, अरावली की विदेशी श्रृंखला, राजपूतों और मुगल राजाओं की ऐतिहासिक विरासत, जो उनके स्मारकों, महलों और किलों के अवशेषों में पाए जाते है, विदेशों से भी, बहुत सारे पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करते हैं। वर्तमान में, राजसी महलों को आराम और विलासिता प्रदान करने के प्रावधान के साथ हेरिटेज होटलों में बदल दिया गया है। राजस्थान, जाटों, भीलों और गुर्जरों की स्थानीय जनजातियों की उच्च आबादी के साथ खानों और वस्त्रों का खजाना भी है। राजस्थान के सुंदर हस्तशिल्प और कलाकृतियाँ राष्ट्र द्वारा अत्यधिक प्रशंसित हैं। राजस्थान प्रदेश अपने सांस्कृतिक उत्साह में अद्वितीयता के साथ खड़ा हुआ है। राजस्थानी संगीत, त्यौहार, व्यंजन और जीवनशैली ऐसे रत्न हैं जिन पर पूरा देश गर्व महसूस करता है।

-शंकर लाल सीमावत, क. अनुवादक

जनक जी की दुविधा

राजा जनक प्रायः धर्म-सभायें आयोजित किया करते थे जिसमें जनकपुरी के साधु-सन्तों, गुरुओं, प्रतिष्ठित ब्राह्मणों व समाज के अन्य गणमान्य व्यक्तियों को आमंत्रित किया जाता था और धर्म के विभिन्न बिन्दुओं पर विस्तृत चर्चा होती थी। एक बार ऐसी ही धर्म-सभा में जनक जी महाराज ने प्रश्न रखा कि क्या आप में से कोई ज्ञानी धर्मात्मा बतला सकता है कि मेरे जीवन में सर्वत्र और सर्वदा सुख ही सुख क्यों और कैसे व्याप्त रहा है और मैंने कभी कोई दुःख नहीं देखा, जबकि सुख और दुःख प्रत्येक सांसारिक व्यक्ति के जीवन में आते रहते हैं। कभी न कभी तो कोई दुःख मुझे भी होता, परन्तु ऐसा न होने का क्या कारण रहा होगा।

सभी लोग सोचने लग गए, हाँ बात तो महाराज की सही है। सुख और दुःख तो जीवन के दो अंग हैं। इतने में एक वृद्ध सन्यासी उठे और बोले- महाराज! आपके प्रश्न का उत्तर तो मिल जाएगा परन्तु उसके लिए यहाँ से सौ कोस दूर एक स्थान पर जाना पड़ेगा, जहाँ एक गुफा है। महाराज जनक ने पूछा - पक्की बात है? सन्यासी बोला- जी हाँ। महाराज ने अपने सेवकों से भोजन आदि की व्यवस्था करने के साथ-साथ अन्य तैयारियों सहित उस गुफा की ओर प्रस्थान करने का आदेश दिया।

दूसरे दिन महाराज जनक जी अपने सभी लाव-लश्कर के साथ गुफा पर पहुँचे। अन्दर प्रवेश करने पर देखा कि लम्बी-लम्बी दाढ़ी और जटाओं वाला एक बूढ़ा साधु बैठा-बैठा पत्थर तोड़ रहा है और छोटी-छोटी पथरियों को खाने में लगा है। जनक जी अचम्भित हो गए। जनक जी को देखकर साधु बोले - आओ जनक आओ। मुझे पता है तुम मेरे पास क्यों आए हो। परन्तु तुम्हारे प्रश्न का उत्तर मैं नहीं दे सकता। तुम यहाँ से अभी एक सौ पचास कोस आगे जाओ। वहाँ एक संत तुम्हें मिलेंगे। वे ही तुम्हारे प्रश्न का उचित उत्तर देंगे कि तुम्हारे जीवन में अभी तक कोई दुःख क्यों नहीं आया ?

राजा जनक को आश्चर्य हुआ कि इस सन्यासी को पहले ही ज्ञात हो गया कि मैं उनके पास क्यों आया हूँ? जनक जी ने सेवकों को आगे जाकर व्यवस्था करने का आदेश दिया। महाराज जनक जी अगले दिन अपने उस नये गन्तव्य स्थान पर पहुँचे जहाँ के लिये बाबा ने कहा था। जनक जी ने देखा कि एक वैसा ही वयोवृद्ध सफेद लम्बी दाढ़ी वाला बाबा गोबर के कंड़ों की आग जलाए हुए है और जलते हुए कंडों को फाँकने में लगा है। एक के बाद एक जलता हुआ कंडा अपने मुँह में रख कर निगल रहा है। जनक जी को बहुत आघात लगा और आश्चर्य हुआ कि क्या उनके राज्य में भी ऐसा हो सकता है कि कोई आदमी अन्न की बजाय पत्थर और आग खाकर अपनी भूख मिटाता है। मेरे राज्य में तो धन-धान्य की कोई अल्पता है ही नहीं। कृषक खेती करता है, मेघ जल बरसाते हैं, वृक्ष फल-फूल प्रदान करते है और भरपूर अन्न पैदा होता है। इस सबके होते हुए मेरे शासन में यह विडम्बना कैसी?

अब तो चक्रवर्ती सम्राट जनक जी की जिज्ञासा निरन्तर बढ़ रही थीं। उनके कदम बाबा के पास जाकर थम गए। इससे पूर्व कि जनक जी कुछ पूछें साधु बोले- आओ जनक! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर मैं देता हूँ। राजन् को बहुत आश्चर्य हुआ। अरे! ये कितने बड़े संत हैं जो मेरे नाम, मेरे आने का कारण और मेरी समस्या का निदान पहले से ही जानते हैं और मुझे ज्ञात ही नहीं कि मेरे राज्य में इतने बड़े संत और महापुरूष कितनी कष्टपूर्ण अवस्था में रह रहे हैं। राजन् बोले - बाबा! बतलाइए। मेरे प्रश्न का हल क्या है ? मेरे साम्राज्य में अभी तक मुझे किसी भी दुःख का सामना क्यों नहीं करना पड़ा जबकि प्रत्येक व्यक्ति सुख के बाद दुःख और प्रत्येक दुःख के बाद सुख भोग रहा है।

बाबा बोले - ध्यानपूर्वक सुनो राजन्। पूर्व जन्म में मैं, आप और पहले देखा गया पत्थर खाने वाला बाबा हम तीनों एक ही माता-पिता के बेटे थे। पत्थर तोड़ कर खा रहा बाबा बड़ा था, मैं बीच का और आप सबसे छोटे बेटे थे। हमारे माता-पिता नितान्त गरीब थे। पिता मेहनत-मजदूरी करके जो कुछ कमा कर लातें उससे हमारा परिवार-पोषण करते थे। प्रभु को इतना भी स्वीकार्य नहीं रहा कि पिताजी गुजर गए और हम तीनों बच्चों का पालन पोषण का भार माँ के कमजोर कंधों पर आ पड़ा। खैर! माँ ने सेठों के घर में जूठे बर्तन माँजने व झाड़ू-पौंछा करना प्रारम्भ कर दिया। जो कुछ मिल जाता, उससे हमें खिला-पिला कर सुला देती। समय व्यतीत हुआ, हम तीनों बेटे जवान हुए और हम भी मेहनत-मजदूरी के लिए चौखटी पर जा खडे होते। एक दिन हम तीनों भाइयों को एक ही मालिक के निर्माण किए जा रहे मकान पर मजदूरी मिल गई। माँ ने चार-चार मोटी-मोटी पानी के हाथ की रोटियाँ नमक-मिर्च की चटनी से चुपड कर एक तौलिया के तीन भाग करके कपड़े में अलग-अलग बाँध कर दे दीं। हम दोपहर को रोटी खाने के लिए एकान्त जगह ढूँढ़ कर एक कौने में बैठ गए और अपनी-अपनी रोटियाँ खाने को उद्यत हुए थे कि एक वृद्धजन, काला-काला सा, अधफटे वस्त्र में तन को लपेटे हुए लंगडाता लाठी के सहारे चलता हुआ हमारे पास आया और बडे भाई से गिडगिडाते हुए बोला-भइया! बहुत भूख लगी है, तीन दिनों से पेट में अन्न का एक भी निवाला नहीं गया। मुझे दो-तीन रोटी दे दो, नही तो जान निकल जाएगी।

उसने उसकी ओर देखा और निकम्मा, बदमास आदि ढेरों गालियाँ देता हुआ डाँट कर वह बोला - मेहनत-मजदूरी क्यों नहीं करता है ? कुछ कमा और खा। माँगने से पेट भर जाएगा क्या ? रोटियाँ तुझे दे दूँगा तो मैं क्या पत्थर खाऊँगा। चला आया भिकमंगा कहीं का। चल भाग यहाँ से। वह कहीं नहीं गया और हाथ जोड कर अब मुझ से बोला - भइया। ओ भइया। तू मुझे चल दो ही रोटी दे दे। देख! भूखे को रोटी और प्यासे को पानी पिला देना सबसे बड़ा पुण्य का कार्य है। मैंने बड़े भाई से दस-बीस ज्यादा कठोर-कठोर गालियाँ दीं और मैं चिल्ला कर बोला- कलुए! मैं रोटी तुझे दे दूँ, फिर मैं क्या आग खाऊँगा? तब उसने डरते-डरते सबसे छोटे भाई की ओर दो कदम भरे और पुनः पुरानी आवाज में गिडगिडाते हुए बोला- भइया! तू ही मेरी स्थिति पर रहम खा। देख! पीठ से चिपकता जा रहा मेरा पेट। सुन! तू मुझे एक

रोटी ही दे दे चल। तेरा भला होगा। तुझे कभी कोई दुःख नहीं व्यापेगा। छोटे भाई ने एक नहीं बल्कि चारों रोटियाँ उस भूखे भिखारी को दे दीं।

राजन्! आप को पत्थर तोड कर खाने वाला जो बाबा मिला था वह हमारे पूर्व जन्म का बड़ा भाई है, मैं आग खाने वाला दूसरा भाई और चारों रोटियाँ देकर भिखारी की भूख बुझाने वाला तीसरा और छोटा भाई आप चक्रवर्ती सम्राट राजा जनक हैं। आप को कोई दुःख कैसे हो सकता है जो दूसरों का दुःख न देख सके और धर्म का निर्वहन करते हुए दया पूर्वक अपनी चारों रोटियाँ उसे दे दे। हे राजन्! धर्म के चार स्तम्भ होते हैं और दया उन्हीं में से एक है। आपने धर्म निभाया और धर्म निभाने वाले व्यक्ति के जीवन में दुःख का कोई स्थान नहीं है।

कर्म प्रधान विस्व कर राखा।
जो जस करइ सो तस फल चाखा।

अब आपकी दुविधा दूर हो गई होगी।

-एस.सी मित्तल,से.नि.,व.ले.प.अ.

आप एकान्त में या अकेले.......... आइये पता लगाते हैं

एकान्त (Solitude) और अकेलापन (Loneliness) के बीच मुख्य अन्तर है कि......एकान्त मन की सकारात्मक स्थिति है जब की अकेलापन मन की एक स्थिति है। एकान्त और अकेलापन दो ऐसे शब्द हैं। जिनका उपयोग हम अक्सर एक दूसरे के साथ करते हैं क्योंकि.......ये दोनों शब्द अकेले होने की स्थिति का उल्लेख करते हैं। हालाँकि, अकेलापन आमतौर पर उस दुःख को संदर्भित करता है जब कोई व्यक्ति या कोई दोस्त नहीं होता है, जबकि एकान्तता, अकेलापन महसूस किए बिना अकेले रहने की अवस्था होती है। इस प्रकार, एकान्त और अकेलेपन के बीच एक अलग अंतर है....

एकान्त क्या है.....?

एकान्त अकेले रहने की स्थिति है, खासकर जब यह शांतिपूर्ण सुखद है। दूसरे शब्दों में, यह अकेला के होने की स्थिति है, जो आपके स्वयं के लिए समय की अनुमति देती है। उदाहरण के लिए, आप कभी कभी अकेले रहना चाहते हैं। और किसी पुस्तक को पढ़ने या फिल्म देखने जैसी गतिविधि में संलग्न हो सकते हैं। उदाहरण में, आपको किसी अन्य व्यक्ति के साथ बातचीत के बिना, अपने स्वयं के स्थान और समय की आवश्यकता है। इस प्रकार, एकांत वांछनीय अवस्था है जहाँ आप अपने आप को अद्भुत रुप दे सकते हैं और.........
इसके अलावा, आत्म-प्रतिबिंब, गहरी पढ़ने और प्रकृति की सुंदरता का अनुभव करने जैसी गतिविधियों के लिए एकान्त की आवश्यकता होती है। रचनात्मक और सोच के लिए भी एकान्त की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, मन की यह स्थिति शांति और शांति का परिणाम है।

अकेलापन क्या है..........?

अकेलापन एक दुःख या अवसाद है जब कोई भी साथी या दोस्त नहीं होता है। हालांकि, एक व्यक्ति अकेलापन महसूस कर सकता है, भले ही वह दूसरों से घिरा हो। आप अपने दोस्तों और प्रियजनों के बीच भी अकेलापन महसूस कर सकते हैं। इस प्रकार, अकेलापन वास्तव में अन्य प्राणियों के साथ संबंध या संचार की कमी की विशेषता है। दूसरे शब्दों में, यह भौतिक या भावनात्मक या तो अलगाव की नकारात्मक या अप्रिय भावनात्मक प्रतिक्रिया है।
अकेलापन हमेशा मन की एक नकारात्मक स्थिति है, जब कोई अकेला होता है, तो हमेशा महसूस करेगा कि कुछ गायब है। इस प्रकार, अकेलापन आपके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। वास्तव में, अकेलापन अक्सर मनोवैज्ञानिक स्थितियों जैसे अवसाद से जुड़ा होता है, इसके अलावा, यह आत्महत्या जैसी अन्य हानिकारक स्थितियों से भी जुड़ा हुआ है----।
इसलिए यदि आप एकांत पसंद है तो बेहतर है----

अकेलापन तब पसंद होता है---- जब आप सारे जहाँ से नाराज होते हैं, आपको लगता है कि इस संसार में कोई भी नहीं है, जिसे आपकी फिक्र या चिन्ता है---- आपको कोई भी ऐसा नहीं लगता, जिसे आप अपने मन की बात, समस्या या दुःख कह सको–-- इस स्थिति में व्यक्ति मौन होता है, किन्तु उसके भीतर बहुत शोर और चीख- चिलाहट होती है।

एकांतता तब पसंद आती--- जब आप लाभ, हानि, यश, अपयश, अपना, पराया के बोध से ऊपर उठ चुके होते हैं और अपना समय सृजन, शांति एवम् सद्ज्ञान में व्यतीत करना चाहते हैं---- यह भी मौन स्थिति है, किन्तु मौन संतुष्टि और आत्म ज्ञान की चुप्पी है---- और मेरा महत्वपूर्ण अनुभव यह भी है कि एकान्तता--- अकेलेपन की चरम स्थिति है, मतलब एकान्त होने का अभ्यास तब ही संभव है जब आपने अकेलेपन पर विजय पा ली हो----एकान्तता--- सार्वभौमिक अन्तिम सत्य है---

-अरुण कुमार शर्मा, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

लकीर

"उफ्फ... इस चैराहे की बत्ती को भी अभी लाल होना था।" अनायास ही ये शब्द मेरे मुँह से निकल पडे। कुछ सैकंड के लिये रूक जाती तो ऑफिस थोड़े ही समय में पहुंच जाता। कल ही तो अपने अधिकारी से डांट खाई थी। जिस तिरस्कार और हेय दृष्टि से उन्होने मुझे देखा था, कहने के लिये बाकी कुछ रह नहीं गया था। मन की गति को कोई नहीं भांप पाया है, खुद के ही सवाल होते है और खुद के ही जवाब होते है, कुछ ही देर में क्या-क्या सोच लेता है। देखो ना, ये नन्हा सा बच्चा गाडी को बाईं तरफ से साफ कर चुका था।

मेरी तन्द्रा तब टूटी जब वह मेरे सामने से शीशा साफ कर रहा था। उसकी एक नजर गाडी पर तो दूसरी नजर मुझ पर बनी हुई थी। मैं अपने बटुऐं में कुछ सिक्के ढूँढने की कोशिश कर रहा था और तब तक वो मेरी तरफ वाली खिडकी का शीशा साफ कर चुका था। सिक्के ढूँढने में हो रही देरी को शायद उसने भाँप लिया था, वह एकाएक मेरी पीछे वाली खिडकी को साफ करने लग गया। मन ही मन मैने कहा "रोज तो इतने सिक्के रहा करते थे" इतना कहना था कि पीछे से एक के बाद एक हॉर्न की आवाजें आने लगी। ध्यान बटुऐं से हटाकर जब सामने देखा तो बत्ती हरी हो चुकी थी और सडक एकदम साफ नजर आ रही थी। फिर से मैं भी उसी दौड में शामिल हो गया जो बाकी लोग लगा रहे थे, वो बेबाक सा उसी जगह मूर्तिवत सा खडा रह गया, चेहरे पर कोई भाव नहीं, गाडियां उसके दाऐं-बाऐं से गुजर रही थी। मैं भी उसको तब तक देखता रहा जब तक कांच में उसकी हिलती हुई आकृति धूमिल न हो गई।

कुछ ही मिनट में मैं अपने ऑफिस में था, गाडी से बाहर आकर पीछे की तरफ बैग लेने मुडा तो एक धक्का सा लगा । जब धूल से सने सीसे पर अचानक गाडी चलने से उसके नन्हे से हाथ की उंगलियो से खिंची लकीरे देखी। असली धूल, शायद शीशे पर नहीं बल्कि मेरी आंखों पर थी जो अब हट चुकी थी। सच में एक लकीर तो खींच गई थी, गाडी पर नहीं वरन मेरे मन पर। हड़बड़ाहट में मैने बैग उठाया और फिर प्रतिदिन की तरह ऑफिस की तरफ दौड़ पड़ा।

-अशोक वर्मा, डी.ई.ओ.

राष्ट्रीय बचत मासिक आय योजना

पोस्ट ऑफिस मासिक आय योजना, एक ऐसी सरकारी बचत योजना है जो भारत के किसी भी नागरिक द्वारा किये गए एक मुश्त निवेश पर एक निश्चित मासिक आय की गारंटी देती है। यह पांच वर्षीय बचत योजना है । इस योजना के तहत कोई भी व्यक्ति अपना खाता खुलवा सकता है। कुल जमा पूँजी पर सालाना ब्याज के हिसाब से रिटर्न की गणना की जाती है तथा ब्याज की राशि प्रति माह एक निश्चित आय के रुप में प्राप्त होती रहती है। पांच वर्ष पश्चात पूरी जमा पूंजी वापिस मिल जाती है। इस योजना में जमा पूंजी हमेशा बरकरार रहती है।

(1) खाता कौन खुलवा सकता है- इस योजना के तहत कोई भी भारतीय नागरिक एकल खाता अथवा संयुक्त खाता (जॉइंट ए अथवा जॉइंट बी) खुलवा सकता है। बच्चे के नाम से भी खाता खोला जा सकता है। बच्चा यदि 10 वर्ष से कम उम्र का है तो उसके नाम पर उसके माता पिता अथवा कानूनी अभिवावक खाता संचालन कर सकता है। 10 वर्ष से अधिक आयु की स्थिति में खाता बच्चे के स्वयं के नाम में भी खोला जा सकता है।

(2) न्यूनतम/अधिकतम पूंजी सीमा–यह खाता न्यूनतम 1000- रुपये से तथा 100 के गुणक में खोला जा सकता है। एकल खाते की अधिकतम जमा राशि सीमा 4.50 लाख रुपये तथा युगल खाते के मामले में अधिकतम सीमा 9 लाख रुपये है।

(3) खाता खुलवाने की विधि- अपनी सुविधानुसार किसी भी नजदीकी डाकघर में जाकर यह खाता खुलवाया जा सकता है। इसके लिए आवश्यक दस्तावेज पहचान पत्र एवं आवास प्रमाण पत्र (आईडी प्रूफ व एड्रेस प्रूफ) की छायाप्रति यथा आधार कार्ड, पैन कार्ड, राशन कार्ड ड्राइविंग लाइसेंस, वोटर आईडी) पासपोर्ट साइज फोटोग्राफ खाता खोलने के निर्धारित फॉर्म के साथ संलग्न करके डाकघर में जमा करने होंगे।

(4) ब्याज–वर्तमान में इस योजना पर ब्याज दर 6.6% वार्षिक है। खाता खोलने की तिथि से एक माह पूरा होने पर मासिक ब्याज देय होता है।

(5) खाता परिपक्वता विधि- खाता खोलने की तिथि से एक वर्ष की अवधि पूर्ण होने पर ही यह खाता बंद करवाया जा सकता है। खाता खोलने की तिथि से पांच वर्ष पश्चात खाता बंद करने के लिए निर्धारित फॉर्म के साथ पास बुक संलग्न करके सम्बंधित डाकघर में प्रस्तुत करने पर यह खाता बंद करवाया जा सकता है।

यदि खाता धारक चाहे तो समय पूर्व भुगतान भी प्राप्त कर सकता है। समय पूर्व भुगतान हेतु निम्न शर्ते लागू होती है-

(i) खाता खोलने की तिथि से एक वर्ष से पूर्व खाता बंद नहीं करवाया जा सकता ।

(ii) खाता खोलने की तिथि से एक वर्ष से तीन वर्ष के मध्य खाता बंद करने पर मूल जमा धनराशि से 2% की कटौती एवं 3 वर्ष से 5 वर्ष के मध्य बंद करने पर मूल धनराशि से 1% की कटौती कर शेष जमा धनराशि का भुगतान कर दिया जाता है।

(6) लाभ-

(i) खाता खोलने की तिथि पर लागू ब्याज दर से अगले पांच साल तक प्रति माह निश्चित आय की सुरक्षा प्रदान करता है।

(ii) इस खाते पर स्थाई अनुदेश (Standing Instruction) की सुविधा के तहत मासिक ब्याज प्रति माह सीधे ही अपने बचत खाता में प्राप्त किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश ब्याज की निकासी नहीं कर पाते है तो उस ब्याज की राशि पर आपको बचत खाते पर लागू ब्याज दर से पुनः ब्याज मिलता है ।

(iii) मासिक आय योजना से प्रति माह प्राप्त ब्याज से निश्चित गुणक में आवर्ती जमा खाते में पुनः निवेश किया जा सकता है। इस प्रकार आपको प्रति माह डाकघर में उपस्थित होकर निकासी अथवा जमा करने की आवश्यकता नहीं होती है।

(iv) प्राकृतिक एवं कृत्रिम आपदा एवं हादसों के शिकार व्यक्तियों जिन्हें सरकार द्वारा मुआवजे के तौर पर एकमुश्त राशि प्रदान की जाती है अथवा अन्य किसी रुप में कोई सहायता राशि प्रदान की जाती है तो उस राशि से प्रति माह एक निश्चित मासिक आय प्राप्त करने हेतु मासिक आय योजना एक अच्छा विकल्प है।

-दीपिका जोशी, अतिथि रचनाकार

हिंदी पखवाड़ा समारोह - 2020

महालेखाकार भवन, जयपुर स्थित चारों कार्यालयों यथा-कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक.) राजस्थान, जयपुर, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) राजस्थान, जयपुर, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर एवं कार्यालय प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), शाखा कार्यालय जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 14.09.2020 से 28.09.2020 तक हिन्दी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया। पखवाड़ा की शुरूआत दिनांक 14.09.2020 को हिंदी दिवस के अवसर पर कार्यालय परिसर में हिंदी की सूक्तियों के पोस्टर एवं डिजीटल डिस्प्ले लगाकर तथा माननीय गृह मंत्री के राजभाषा संदेश को प्रत्येक अनुभाग में ई-मेल से भेजकर की गई।

दिनांक 15.09.2020 से 27.09.2020 के मध्य हिंदी टिप्पण-प्रारूपण, हिंदी लघुकथा लेखन, हिंदी स्व-रचित कविता लेखन एवं हिंदी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता का ऑनलाइन आयोजन किया गया जिसमें चारों कार्यालयों के प्रतिभागियों ने अत्यन्त उत्साह से भाग लिया। हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन दिनांक 28.09.2020 को कोविड-19 के सम्बन्ध में निर्गमित मार्गदर्शिका के अनुसार बहुत ही लघु स्तर पर किया गया जिसमें प्रतियोगिता के विजेयता एवं चारों कार्यालयों के उच्चाधिकारी सम्मिलित हुए। प्रधान महालेखाकार द्वारा विजेताओं को पुरस्कृत किया गया तथा मेल द्वारा ई-प्रमाण पत्र भी प्रेषित किए गए।

हिंदी पखवाड़ा -2020 प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची

नाम	पदनाम	प्रतियोगिता का नाम	स्थान
नरेश कृपलानी	सहायक लेखाधिकारी	लघु-कथा लेखन	प्रथम
रवि शंकर विजय	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	लघु-कथा लेखन	द्वितीय
शिवपाली खण्डेलवाल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लघु-कथा लेखन	तृतीय
रजनीश शर्मा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	स्व रचित कविता लेखन	प्रथम
राव जितेन्द्र प्रसाद	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	स्व रचित कविता लेखन	द्वितीय
कैलाश आडवाणी	वरिष्ठ लेखाकार	स्व रचित कविता लेखन	तृतीय
भगवान दास	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	टिप्पण-प्रारूपण	प्रथाम
विजय कुमार अग्रवाल	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	टिप्पण-प्रारूपण	द्वितीय
संतोष कुमार बूला	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	टिप्पण-प्रारूपण	तृतीय
रक्षा गुप्ता	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	निबन्ध लेखन	प्रथम
राजीव भाटिया	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	निबन्ध लेखन	द्वितीय
शंकर लाल	एम.टी.एस.	निबन्ध लेखन	तृतीय

स्मृतियाँ

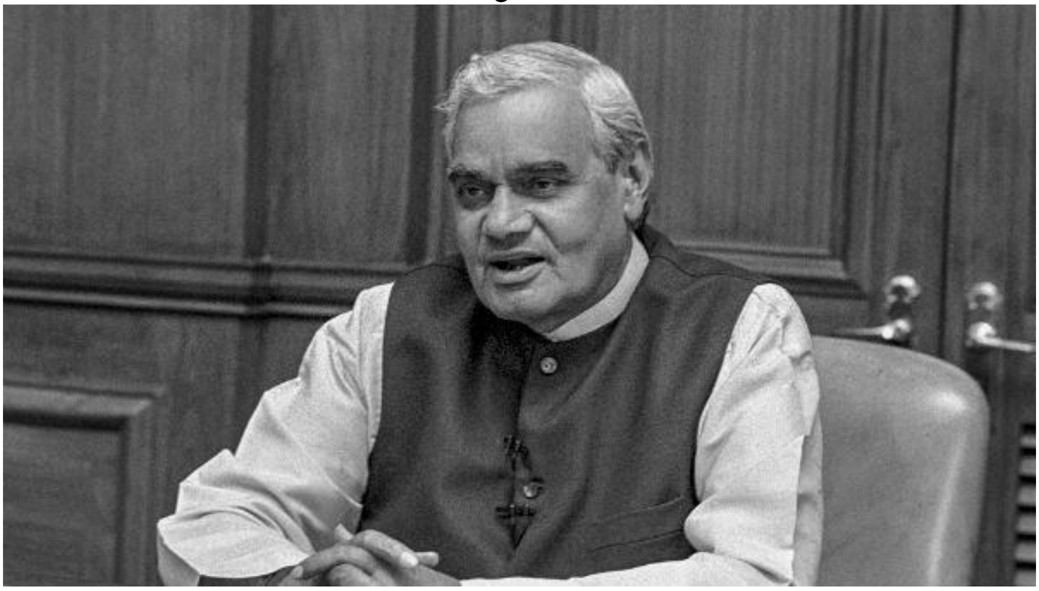

4 अक्टूबर, 1977 को भारत-रत्न एवं पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने विदेश मंत्री के तौर पर संयुक्त राष्ट्र के अधिवेशन में हिंदी में भाषण दिया था। वाजपेयी ने अपने पहले भाषण से ही सभी के दिल में हिंदी भाषा का गहरा प्रभाव छोड़ दिया था।

कार्यालय उपयोग में काम आने वाली शब्दावली

क्रं.सं.	अंग्रेजी शब्दावली	हिंदी
1.	Ab initio	आरंभ से
2.	Absolute majority	पूर्ण बहुमत
3.	Abuse of power	शक्ति का दुरुपयोग
4.	Action committee	कार्यवाही समिति
5.	Adjourn sine die	अनिश्चित काल के लिए स्थगित करना
6.	Adult franchise/suffrage	व्यस्क मताधिकार
7.	Compassionate ground	अनुकम्पा आधार
8.	Contingent expenditure	आकस्मिक व्यय
9.	De facto recognition	तथ्यतः मान्यता
10.	Motion of no confidence	अविश्वास प्रस्ताव
11.	Steering committee	संचालन समिति
12.	Stagflation	मुद्रास्फीतिजनित मंदी
13.	Seniority-cum-fitness	वरिष्ठता सह उपयुक्तता
14.	Pre-revised pay	संशोधन-पूर्व वेतन
15.	Post-facto sanction	कार्योत्तर मंजूरी
16.	Null and void	अकृत और शून्य
17.	Noting and drafting	टिप्पण और प्रारूपण
18.	Zero tolerance	शून्य सहिष्णुता
19.	Lease-cum-sale deed	पट्टा व बिक्री विलेख
20.	Keyhole journalism	ताक-झांक/पर्दाफ़ाश पत्रकारिता

कोविड-19 से बचाव हेतु कार्यालय परिसर में छिडकाव

चिकित्सा शिविर का आयोजन

गणतन्त्र दिवस पर गुब्बारे आकाश में छोडते हुए

गणतंत्र दिवस पर पारितोषिक वितरण

फुटबॉल टीम का विजयोल्लास

****